सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# सह्याद्रि

## 42 वाँ अंक, वर्ष 2026

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंबई- 400051



# गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' के 41वें अंक का विमोचन






स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, माननीय निदेशक महोदय श्री देवेन्द्र अब्बिगेरी भारतरत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण पश्चात सादर नमन करते हुए|

वर्ष 2026

अंक 42 वाँ

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

## कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

**सी - 25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा पूर्व, मुंबई 400051**

# मुखपृष्ठ

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी रेलवे स्टेशन), जिसे पहले विक्टोरिया टर्मिनस (वीटी) स्टेशन के नाम से जाना जाता था, मुंबई का सबसे लोकप्रिय और व्यस्त रेलवे स्टेशन है। यह एक ऐतिहासिक महत्व वाला स्मारक है, जो दुनिया के बेहतरीन रेलवे स्टेशनों में से एक है।मुंबई शहर के मध्य में स्थित सीएसएमटी स्टेशन को 2004 में यूनेस्को द्वारा "विश्व धरोहर स्थल" घोषित किया गया है। इस स्टेशन का निर्माण वर्ष 1878 में आरंभ हुआ था और वर्ष 1888 में पूर्ण हुआ था। यह विक्टोरियन गोथिक शैली और पारंपरिक भारतीय वास्तुकला का अद्भुत मिश्रण है। यह शाही इमारत जो आज मुंबई शहर का प्रतिनिधित्व करती है, ग्रेट इंडियन पेनिनसुलर रेलवे के मुख्यालय के रूप में कार्य करने के लिए बनाई गई थी। पत्रिका के मुखपृष्ठ के लिए चयनित छायाचित्र का छायांकन हमारे कार्यालय के निदेशक, श्री देवेन्द्र अब्बिगेरी जी द्वारा किया गया है।

# सह्याद्रि परिवार

## प्रकाशक

**कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंबई- 400051**



**प्रधान संरक्षक**

**सुश्री आस्था लूथरा**

प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (कें.), मुंबई



**संरक्षक**

**श्री देवेन्द्र अब्बिगेरी**

निदेशक



**संपादक**

**सुश्री स्वप्ना पिन्हेरो**

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



**संपादक**

**सुश्री सुमित एस.**

सहायक निदेशक (राजभाषा)

## संपादक मंडल



**श्री हरिओम कुमार**

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी



**सुश्री बिना कुमारी राय**

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी



**सुश्री पूजा साव**

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी



**श्री रोहित साह**

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बंधित लेखक के हैं, उनसे कार्यालय या संपादक मंडल की सहमती आवश्यक नहीं है

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | शीर्षक | रचनाकार | पृ.सं. |
|---|---|---|---|
| 1 | सह्याद्रि 41वें अंक का विमोचन तथा राजभाषा शील्ड-2025 | | 2 |
| 2 | मुख पृष्ठ | | 3 |
| 3 | सह्याद्रि परिवार | | 4 |
| 4 | अनुक्रमणिका | | 5 |
| 5 | गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार का सन्देश | | 6-7 |
| 6 | प्रधान संरक्षक की कलम से | | 8 |
| 7 | संरक्षक की कलम से | | 9 |
| 8 | संपादकीय | | 10 |
| 9 | आपके पत्र | | 11-12 |
| 10 | राष्ट्रमंडल खेल (कॉमनवेल्थ गेम्स) | श्री राकेश कुमार सिंह, स.ले.प.अ. | 13 |
| 11 | शुभ दीपावली | श्री आशुतोष अनिल विश्नोई, स.ले.प.अ. | 14 |
| 12 | श्वासों का मोल | श्री प्रकाश कुमार, स.ले.प.अ. | 15 |
| 13 | कारगिल का अमर वीर : कैप्टन नेइकेझाकुओ केंगुरुसे, महावीर चक्र | श्री सतशील क. कांबले, व.ले.प. | 16 |
| 14 | बिहार का गौरव : लिट्टी चोखा | श्री राकेश कुमार सिंह, स.ले.प.अ. | 17 |
| 15 | दूसरा पहलू | श्री हरिओम कुमार, व.अ.अ. | 18-20 |
| 16 | महाराष्ट्र मानसून ट्रेक | श्री हेमन्त चन्द, डी.ई.ओ. एवं निजी सचिव, प्र.नि.ले.प | 21-23 |
| 17 | सपना और हकीकत | श्री एन. डी. दलवी, ले.प. | 23 |
| 18 | भगवान तो गए काम से | श्री कुमार सौरभ, ले.प. | 24-25 |
| 19 | वृंदावन यात्रा और मेरा अनुभव | श्री पुरुषोत्तम कुमार श्रीवास्तव, स.ले.प.अ. एवं सचिव, प्र.नि.ले.प. | 26-27 |
| 20 | माता - पिता | श्री चितरंजन कुमार वर्मा, सहायक पर्यवेक्षक | 28-29 |
| 21 | अकारण मिलन | सुश्री आयुषी, बहन, सुश्री बिना कुमारी राय, क. अ. अ | 30 |
| 22 | क्यूँ है | श्री हरिओम कुमार, व.अ.अ. | 30 |
| 23 | पंढरपुर की वारी | श्री शोकुल रतन खुविशो, डी. ई.ओ | 31-32 |
| 24 | खोखले नारों का सफर | श्री राकेश रौशन, ले.प. | 32 |
| 29 | सरकारी नौकरी | सुश्री शची प्रिया, पत्नी श्री रोहित साह, क. अ. अ | 33 |
| 30 | छोटी-छोटी खुशियाँ | श्री शोकुल रतन खुविशो, डी.ई.ओ. | 34 |
| 31 | जो होता है, अच्छे के लिए होता है | श्री विवेक सिंहल, व.ले.प. | 34 |
| 32 | अरमानों के झूले | श्री राकेश रौशन, ले.प. | 35 |
| 33 | जीवन का गीत | सुश्री पूजा साव, क.अ.अ. | 35 |
| 34 | हाउ आरव बीकेम ए सुपरहीरो | श्री वेद प्रकाश, सहायक पर्यवेक्षक | 36-37 |
| 35 | कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की कुछ झलकियाँ | | 38-39 |
| 36 | दी एनिमल व्हीस्परर | सुश्री अहाना शर्मा, भतीजी: श्री वेद प्रकाश/सहायक पर्यवेक्षक | 40-42 |
| 37 | सेवा निवृत्तियाँ | | 43 |
| 38 | चित्र | देवांश यादव एवं आराध्या पांडेय | 43 |
| 39 | क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2025 जयपुर | श्री रोहित साह, क. अ.अ. | 44-45 |
| 40 | चिकित्सा शिविर आयोजन | | 46-47 |
| 41 | अन्य खेल प्रतियोगिता की उपलब्धियां | | 48-49 |
| 42 | त्रैमासिक बैठक की कुछ झलकियाँ | | 50 |
| 43 | स्वतंत्रता दिवस की कुछ झलकियाँ | | 51 |

**अमित शाह**
**गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**

सत्यमेव जयते



**प्रिय देशवासियो,**

**हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!**

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन–दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

**राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी** ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक–संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन–जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत **'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण** का भी विशेष अवसर है। आज जब देश **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

**14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा** द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय **शासन को जनसामान्य के अधिक निकट** लाने, **लोक–संवाद को सशक्त** करने और **भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त** करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

**माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी** के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का **'विकास भी, विरासत भी'** का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। **इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।**

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित **'भारतीय भाषा अनुभाग'** केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला **'हिंदी शब्द सिंधु'** डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द–संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान–साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान–विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान–निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

**आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!**

**वंदे मातरम!**

**नई दिल्ली**
**14 सितंबर, 2026**

**(अमित शाह)**

# प्रधान संरक्षक की कलम से



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), का कार्यालय, मुंबई की राजभाषा पत्रिका 'सह्याद्रि' का 42वाँ अंक प्रकाशित होने पर समस्त कार्यालय परिवार को मेरी शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कार्यालय द्वारा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु किए जाने वाले प्रयासों को दर्शाता है।

हमारा देश एक बहुभाषिक देश है जहाँ विभिन्न भाषाएँ एवं बोलियाँ परस्पर अस्तित्व में हैं। भाषाई विविधता से भरे इस देश को एकीकृत करने में राजभाषा हिंदी का केंद्रीय स्थान है। देश के उत्तरी छोर से दक्षिणी छोर तक तथा पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर तक, हिंदी सर्वत्र बोली और समझी जाती है। इस प्रकार राजभाषा हिंदी संपूर्ण देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करती है।

हमें राजभाषा हिंदी का प्रयोग गर्व के साथ अपने दैनिक एवं शासकीय कामकाज में करना चाहिए और साथ ही अन्य लोगों को इसका प्रयोग करने हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित करना चाहिए। इस उम्मीद के साथ हमारी पत्रिका "सह्याद्रि" का यह विशेषांक प्रस्तुत है। मुझे विश्वास है कि 'सह्याद्रि' पाठकों को राजभाषा से जोड़ते हुए उनमें पठन-पाठन के साथ लेखन रूचि को भी जागृत करेगी और आप सभी के सहयोग से हमारी पत्रिका सफलता के नए सोपान गढ़ती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित...

आस्था लूथरा

**आस्था लूथरा**
**प्रधान निदेशक**

# संरक्षक की कलम से



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका "सह्याद्रि" का 42वाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। विभागीय पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार व उत्थान में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह हमारे लिए बेहद गर्व की बात है कि हम भी राजभाषा हिंदी के उत्थान में हमारी पत्रिका "सह्याद्रि" के माध्यम से निरंतर अपना सार्थक योगदान दे रहे हैं।

अंग्रेजी के वर्चस्व तथा औपनिवेशीकरण के आघातों के मध्य राजभाषा हिंदी ने न केवल अपना अस्तित्व मजबूत बनाये रखा है अपितु, समय के साथ निरंतर अपना विकास भी कर रही है। आज हिंदी विश्व स्तर पर अपनी आवश्यकता सिद्ध कर रही है। भारतवर्ष से होते हुए हिंदी आज समग्र विश्व में एक सशक्त संपर्क भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने को अग्रसर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी विभागीय राजभाषा पत्रिका "सह्याद्रि" राजभाषा के इस उत्थान के सफ़र में अतुलनीय भूमिका का निर्वहन करेगी।

हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं, हमारी राष्ट्रीय पहचान भी हैं। हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि आम जिन्दगी की तरह हम शासकीय काम-काज में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को विशेष रूप से धन्यवाद तथा पत्रिका हेतु रचनाएँ प्रेषित करने वाले समस्त रचनाकारों का विशेष आभार। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमें यूँ ही आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा और हम निरंतर अपनी पत्रिका का सफल प्रकाशन करते रहेंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ...

देवेन्द्र अब्बिगेरी

**देवेन्द्र अब्बिगेरी**

**निदेशक**

# संपादकीय

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, संवेदनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना हमारी संवैधानिक एवं प्रशासनिक जिम्मेदारी के साथ-साथ हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता भी है। इसी प्रतिबद्धता को सृजनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली हमारी कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' का 42वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है।

'सह्याद्रि' की यात्रा केवल अंकों की संख्या बढ़ने की यात्रा नहीं है, बल्कि यह राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास, प्रयोग और प्रतिष्ठा की यात्रा है। प्रत्येक अंक हिंदी को कार्यालयीन जीवन से जोड़ने तथा हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के हमारे प्रयासों को सुदृढ़ करता है। इस दृष्टि से 'सह्याद्रि' राजभाषा के प्रचार-प्रसार की एक सशक्त समर्थक और प्रेरक शक्ति के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी है।

आज का समय बहुभाषिकता और तकनीकी परिवर्तन का समय है। ऐसे परिवेश में किसी भाषा की प्रासंगिकता उसके व्यापक प्रयोग, सहज स्वीकार्यता और आधुनिक अभिव्यक्ति की क्षमता से निर्धारित होती है। हिंदी ने समय के साथ स्वयं को निरंतर विकसित किया है और प्रशासन, साहित्य, विज्ञान, तकनीक तथा जनसंचार के विविध क्षेत्रों में अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। आवश्यकता इस बात की है कि हम हिंदी का प्रयोग केवल निर्धारित अवसरों तक सीमित न रखते हुए उसे अपने दैनिक कार्यालयीन व्यवहार का स्वाभाविक हिस्सा बनाएं।

'सह्याद्रि' इसी सोच को आगे बढ़ाने का एक माध्यम है। यह हमें न केवल हिंदी में लिखने के लिए प्रेरित करती है, बल्कि अपने विचारों, अनुभवों और सृजनात्मक प्रतिभा को हिंदी के माध्यम से व्यक्त करने का अवसर भी देती है। कार्यालय के प्रत्येक सदस्य की भागीदारी इस पत्रिका को और अधिक जीवंत, समृद्ध एवं प्रभावशाली बनाती है।

इस 42वें अंक के माध्यम से हम साहित्य, संस्कृति, ज्ञान और अनुभवों की विविध धाराओं को एक साथ प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को आनंद देने के साथ-साथ उन्हें सोचने, सृजन करने और हिंदी के प्रति अपने जुड़ाव को और मजबूत करने के लिए प्रेरित करेंगी।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से 'सह्याद्रि' को समृद्ध बनाने वाले सभी रचनाकारों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता/करती हूँ। आपकी सक्रिय सहभागिता ही इस पत्रिका की वास्तविक शक्ति है।

'सह्याद्रि' की यह यात्रा निरंतर जारी रहे—
सृजन से संवाद की ओर,
संवाद से सहभागिता की ओर,
और सहभागिता से राजभाषा के सशक्त भविष्य की ओर।

—इसी शुभकामना के साथ।

**संपादकीय मंडल**



ಮಹಾಲೇಖಾಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department



सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2026-27/175 दिनांक:04.06.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केंद्रीय),
मुंबई, महाराष्ट्र

विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"सह्याद्रि"** के **41वें अंक** की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"सह्याद्रि"** के **41वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री भरत सोनी का लेख - **'बीरबल:एक लघु शोध'**, श्री निलेश कुमार का लेख - **'भाषायी विविधता'**, श्री आई.वी.एस. श्रीनिवास का लेख - **'अंडमान की यात्रा'**, श्री मिथिलेश कुमार की कविता - **'AI वाला कोर्स और हम'**, सुश्री बीना कुमारी राय की कविता - **'स्त्री का फर्ज'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 10-06-2026
16:51:49

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

**चंडीगढ़**

---

HindiCell/SammatiseSambandhit/ I/1552

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्य प्रदेश
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कक्ष/सम्मति/ जावक- दिनांक: 05-08-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
मुंबई

**विषय – अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के 41वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र ।**

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के 41वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है ।

पत्रिका की साज – सज्जा उत्कृष्ट है । पत्रिका मे प्रकाशित सभी रचनाएं प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च स्तरीय है। श्री कुमार सौरभ द्वारा लिखित लेख 'मेरा निश्चय' में जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति है। श्री हेमंत चंद की रचना 'आज का भारत' में वर्तमान दौर के भारत की सुन्दर अभिव्यक्ति है। सुश्री रिम्पा मुखर्जी द्वारा लिखित 'कोलकाता:सिटी ऑफ जॉय' में शहर का खूबसूरत वर्णन, श्री राकेश रोशन की रचना 'पढना क्यों है जरुरी' एवं श्री शशांक तिवारी का लेख 'स्वामी जी' प्रशंसनीय है। शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
MANISH KUMAR
सहायक निदेशक (राजभाषा)

**मध्य प्रदेश**

---

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला – 171003

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171003

सं.प्र.म.ले.(ले.व ह.)/हि.प्र/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/2026-27/42 दिनांक- 16-07-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
सी-25, ऑडिट भवन,बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
मुंबई-400051

विषय : आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 41वें अंक की ई-प्रति की पावती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 41वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,
PHOOL SINGH
ASSISTANT DIRECTOR

गॉर्टन केसल, शिमला – 171003 दूरभाष 0177-2814935
Gorton Castle, Shimla – 171003 Phone: 0177-2814935
Email: ajachimachalpradesh@cag.gov.in

**हिमाचल प्रदेश**

---

कार्यालय प्रधान महालेखापाल (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Principal Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन सं.Phone No: 0281-2441600-06, फैक्स सं.Fax No: 0281- 245623
ई-मेल/E-Mail: agaegujarat@cag.gov.in

सं.हिंदी अनुभाग/पत्रिका समीक्षा/19/2026-27/जा.क्र. 28
दिनांक 28-05-2026

सेवा मे,
सहायक निदेशक/राजभाषा,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
मुंबई 400051
ई-मेल:- rajbhasha.mum.pdac@cag.gov.in

विषय:- कार्यालयी गृह-पत्रिका "सह्याद्रि" के 41 वें अंक की समीक्षा प्रेषण संबंध में।

ना.महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय की पत्रिका "सह्याद्रि" के 41 वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों को अपने लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन करने हेतु बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में, श्री मिथिलेश कुमार की रचना "स्त्री एक सम्मानित मानव: समाज में सोच की परिवर्तन की आवश्यकता", श्री भरत कुमार सोनी की रचना "बीरबल: एक लघु शोध", श्री आशुतोष 'अनिल विश्नोई' की रचना "कर्तव्यों के उपरांत अधिकार", श्री हेमंत चंद की रचना "आज का भारत", सुश्री रिम्पा मुखर्जी की रचना "कोलकाता: सिटी ऑफ जॉय", श्री कुमार सौरभ की रचना "मेरे प्रेरणास्रोत: मेरे पिताजी", सुश्री बिना कुमारी राय की रचना "स्त्री का फर्ज", श्री राकेश कुमार सिंह की रचना "ट्रेड यूनियन/कर्मचारी यूनियन", श्री राकेश रौशन की रचना "रातों का सुकून", और "पढना क्यों जरुरी है", श्री रोहित शाह की रचना "सीतामढी: माँ सीता की जन्म भूमि", और श्री शशांक तिवारी की रचना "स्वामी जी" आदि रचनाएं ध्यानाकर्षित करती है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ और कार्यालयी झलकियां बहुत सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ महत्मा बुद्ध का चित्र भी बहुत सुंदर है।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई और आपकी कार्यालयी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,
Digitally signed by
Bijender Kumar Berwal
Date: 26-05-2026
12:07:08
सहायक निदेशक (राजभाषा)

**गुजरात**

प्रधान महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम -695001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2026-27/ दिनांक 25-05-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),

मुंबई - 400 051

महोदया,

**विषय:** अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका **'सह्याद्रि'** के 41वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

**संदर्भ:** आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 18.05.2026

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका **'सह्याद्रि'** के 41वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री मिथिलेश कुमार का लेख "स्त्री एक सम्मानित मानव: समाज की सोच में परिवर्तन की आवश्यकता", श्री आई वी एस श्रीनिवास का यात्रा वर्णन "अंडमान की यात्रा", श्री कुमार सौरभ का लेख "मेरे प्रेरणास्रोत: मेरे पिताजी", सुश्री बिना कुमारी राय की कविता "स्त्री का फर्ज है" और श्री राकेश रौशन का लेख "पढना क्यों है जरूरी" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका **'सह्याद्रि'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
Digitally signed by Rohini K R
Date: 25-05-2026 11:05:06
सहायक निदेशक (राजभाषा)

**केरल**

---

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II) KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

स.लेप.-II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2026-27 दिनांक : 29-05-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
मुंबई

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका''सह्याद्री'' के 41वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं। विशेषकर श्री मिथिलेश कुमार द्वारा लिखित लेख 'स्त्री एक सम्मानित मानव: समाज की सोच में परिवर्तन की आवश्यकता, श्री आई.वी.एस. श्रीनिवास द्वारा लिखित यात्रावृत्तांत 'अंडमान की यात्रा' तथा श्री आशुतोष 'अनिल' विश्नोई द्वारा लिखित कविता 'हीरे की शक्ल', श्री कुमार सौरभ द्वारा रचित कविता'मेरा निश्चय ! एवं श्री हेमंत चंद द्वारा रचित कविता 'आज का भारत' अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाईयाँ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
Digitally signed by A M Bhadrambika
Date: 29-05-2026 11:27:56
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 – 2330899 ई-मेल / e-mail : agaukerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax – 0471-2330699
वेबसाइट /Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

**केरल**

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल), डीएफ-ब्लॉक, सेक्टर-1
साल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

Supreme Audit Institution of India
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, AUDIT (II), WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK, SECTOR I
SALT LAKE CITY
KOLKATA – 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 173 दिनांक:- 21/05/26
No. – H.C/P. P/ 21 MAY 2026

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
मुंबई-400051

To,
The Assistant Director/O.L.
Office of the Pr. Director of Audit (Central), Mumbai,
C-25, Audit Bhavan, Bandra-Kurla Complex,
Mumbai-400051

**विषय: कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सहाद्रि' के 41वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'सह्याद्रि' के 41वें अंक के ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- कोलकाता: सिटी ऑफ जॉय, मेरे प्रेरणास्तोत: मेरे पिताजी, मेरी माँ, बजट 2026, मुझे क्या मिला?, रातों का सुकून तथा स्वामी जी आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
21.05.26
सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

**पश्चिम बंगाल**

---

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
**महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,**
**भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग**
**Office of the Accountant General (A & E), Karnataka**
**Indian Audit & Accounts Department**

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2026-27/175 दिनांक:04.06.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केंद्रीय),
मुंबई, महाराष्ट्र
विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"सह्याद्रि"** के **41वें अंक** की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"सह्याद्रि"** के **41वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री भरत सोनी का लेख - **'बीरबल:एक लघु शोध'**, श्री नितेश कुमार का लेख - **'भाषायी विविधता'**, श्री आई.वी.एस. श्रीनिवास का लेख - **'अंडमान की यात्रा'**, श्री मिथिलेश कुमार की कविता - **'AI वाला कोर्स और हम'**, सुश्री बीना कुमारी राय की कविता - **'स्त्री का फर्ज'** प्रशसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by Uday Pratap Singh
Date: 10-06-2026 16:51:49
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

**कर्नाटक**

# कॉमनवेल्थ गेम्स

(राष्ट्रमंडल खेल)



श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कॉमनवेल्थ गेम्स या राष्ट्रमंडल खेल विश्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण बहु-खेल प्रतियोगिता है। ओलंपिक और एशियाई खेलों की तरह ही इस आयोजन का भी खेल जगत में बहुत बड़ा स्थान है। इस प्रतियोगिता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें केवल वे ही देश भाग लेते हैं, जो कभी ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहे थे या राष्ट्रमंडल (Commonwealth of Nations) के सदस्य हैं। यह खेल आयोजन विभिन्न देशों के बीच वैश्विक भाईचारे, शांति और खेल भावना को बढ़ावा देने का एक अनूठा मंच है।

शुरुआत में इसे 'ब्रिटिश एम्पायर गेम्स' (British Empire Games) के नाम से जाना जाता था। इसके बाद समय के साथ इसके नाम बदले गए, जैसे- 'ब्रिटिश एम्पायर एंड कॉमनवेल्थ गेम्स' और 'ब्रिटिश कॉमनवेल्थ गेम्स'। अंततः वर्ष 1978 में इसका नाम स्थायी रूप से 'कॉमनवेल्थ गेम्स' (Commonwealth Games) कर दिया गया।



ओलंपिक की तरह ही ये खेल भी हर चार साल में एक बार आयोजित किए जाते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण वर्ष 1942 और 1946 में इन खेलों का आयोजन नहीं हो सका था।

वर्तमान समय में राष्ट्रमंडल खेल आधुनिक और व्यापक हो चुके हैं। वर्तमान में राष्ट्रमंडल देशों के संगठन में 56 सदस्य देश शामिल हैं, लेकिन इन खेलों में 70 से अधिक टीमें हिस्सा लेती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ब्रिटेन के विभिन्न हिस्से (जैसे इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स और उत्तरी आयरलैंड) अपनी अलग-अलग टीमें भेजते हैं। वर्तमान खेलों की एक बड़ी खूबी यह है कि इसमें सामान्य एथलीटों के साथ-साथ पैरा-एथलीटों (दिव्यांग खिलाड़ियों) के लिए भी पदक स्पर्धाएं आयोजित की जाती हैं।

भारत का राष्ट्रमंडल खेलों में एक गौरवशाली और ऐतिहासिक सफर रहा है। भारत ने पहली बार 1934 के लंदन राष्ट्रमंडल खेलों में भाग लिया था। तब से लेकर आज तक भारतीय एथलीटों ने वैश्विक स्तर पर देश का मान बढ़ाया है।

- **पहला पदक:** भारत के लिए राष्ट्रमंडल खेलों का पहला पदक (कांस्य पदक) 1934 में पहलवान राशिद अनवर ने जीता था।
- **पहला स्वर्ण पदक (ऐतिहासिक पल):** फ्लाइंग सिख के नाम से मशहूर दिग्गज धावक मिल्खा सिंह ने 1958 के कार्डिफ खेलों में 440 यार्ड दौड़ में भारत को पहला ऐतिहासिक स्वर्ण पदक दिलाया था।
- **वर्ष 2010 का ऐतिहासिक आयोजन:** भारत के लिए सबसे गौरवशाली क्षण तब आया जब वर्ष 2010 में राजधानी नई दिल्ली में 19वें राष्ट्रमंडल खेलों का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भारत ने रिकॉर्ड 101 पदक (38 स्वर्ण सहित) जीतकर पदक तालिका में दूसरा स्थान हासिल किया था। यह भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

भारत ने पारंपरिक रूप से निशानेबाजी (Shooting), कुश्ती (Wrestling), भारोत्तोलन (Weightlifting), मुक्केबाजी (Boxing) और बैडमिन्टन (Badminton) में दुनिया पर अपनी धाक जमाई है। अभिनव बिंद्रा, सुशील कुमार, साइना नेहवाल, पी.वी. सिंधु, मीराबाई चानू और अचंत शरत कमल जैसे दिग्गजों ने इन खेलों में कई स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया है। बर्मिंघम 2022 खेलों में महिला टी-20 क्रिकेट को शामिल किया गया, जहाँ भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने रजत पदक जीतकर एक नया इतिहास रचा।

राष्ट्रमंडल खेल केवल पदकों की होड़ नहीं, बल्कि दुनिया भर के एथलीटों को एक सूत्र में पिरोने का माध्यम हैं। भारत ने इस मंच पर न केवल अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाया है, बल्कि यह भी साबित किया है कि सही अवसरों के मिलने पर भारतीय युवा वैश्विक पटल पर किसी से कम नहीं हैं। भविष्य में भी यह मंच भारतीय खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने और देश का तिरंगा ऊँचा लहराने की प्रेरणा देता रहेगा। ■



श्री आशुतोष अनिल विश्नोई
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

# शुभ दीपावली

कालजयी प्राणी का चिरकाल उत्सव, दीपोत्सव दीपावली आद्यपर्यंत अपनी मूलधारणा एवं विरासत के साथ भारतभूमि के जन-जन का आह्लाद उत्सव है। यंत्रीकरण एवं समयबद्ध विकास की अवधारणा ने विधि-विधान में आमूलचूल परिवर्तन किए हैं। सार्थक, यथोचित एवं जनमान्य संशोधन स्वागत योग्य हैं, परंतु हुल्लड़बाजी का दिखावा अवांछनीय एवं बेढंगा है। श्री शिवभूमि शिवकाशी (पटाखों का उत्पादन केंद्र) को उल्लास की ओट में बारूद के ढेर पर बिठा देना, आए दिन होती भीषण दुर्घटनाएं, नारायण के ही पर्व पर नरबलि कहाँ तक औचित्य पूर्ण है।

चीनी की मिठास चीनी कृत्रिम दियों ने, और ग्राहकों की बाट-जोहते दरिद्र कुंभकारों की मंहगाई से जूझती जरूरतों ने फीकी कर दी है। दर-दिन दुर्दिन हो रहे हैं, सुरसा के मुख-सी बढ़ती मंहगाई, तेंदुलकर समिति की अनुशंसाओं के विपरीत अपनी गरीबी-रेखा आरेखित कर रही है।

कार्ल हॅरिच मार्क्स का मार्क्सवाद भारतीय सभ्यता में शासक और शासित के अपने आयाम स्थापित कर रहा है। उदाहरणार्थ, वैभवशाली पूंजीपतियों की दीपावली गरीब की दीपावली से भिन्न है; स्वरूप में भी और साकार में भी। "इतिहास स्वयं को दोहराता है, पहले एक त्रासदी की तरह, दूसरे एक उपहास की तरह" । अब यहाँ पूंजी की जगमगाहट देखता और अंधकार में रजत किरण खोजता गरीब परिवार, मायूस रह साहबों की बख्शीश पर अपने उत्सव की रस्में पूरी करता है, जो मात्र खानापूर्ति ही होती हैं। "मानसिक पीड़ा का एकमात्र मारक शारीरिक पीड़ा है", जिससे हर दीपावली पर उसे दो-चार होना पड़ता है।

दुरुपयोग की दृष्टि से वायु प्रदूषण चरम समस्या है। पटाखों की कुरीति एक स्वयंसिद्ध प्रश्न है, जो कलि रूप में आततायी हो गयी है। ध्वनि की बेलगाम तीव्रता वृद्ध, शिशु, निशक्त, रूग्ण, गर्भवती एवं पशु-पक्षियों को हानि पहुंचाती है, जिसका ध्वनिकर्ता को कम ही स्मरण होता है। शासन की नवीनतम ध्वनि उत्सर्जन पर रोक की नीति इस ओर एक सकारात्मक कदम है। दिल्ली में न्यायालय के पटाखे न चलाने के आदेश का सामूहिक उपहास हम देख ही चुके हैं । कहते हैं "लोकतंत्र समाजवाद का रास्ता है"। अतः इस सामाजिक विसंगति का, सामाजिक हित में, समाज से उन्मूलन नितांत आवश्यक है। दीपों की माला को पटाखों की माला ना बनाएं।

*दीपोत्सव में ध्वनी प्रदूषण,*
*दें धूल-धुएँ को अब विश्राम।*
*सौहार्द प्रेम संग ईश् मिलन,*
*में नहीं हैं इनका कोई काम।*
*खर-दूषण का भाई प्रदूषण,*
*बन गया यहाँ समस्या आम।*
*क्या यह समस्या मिटाने भी,*
*फिर अवतरेंगे श्री राजा राम।*

उपायों की दृष्टि से खाद्य पदार्थों (घी एवं तेल) का दीपक-हवन दहन एक धर्म आधारित आवश्यक प्रथा है, जिसका मिथक अब टूटना चाहिए। त्यौहार की माँग पूरी करने हेतु मिष्ठान में मिलावट आम समस्या है, जिस ओर खाद्य और आपूर्ति विभाग के अशेष प्रयास सघन और तीव्र करना वांछित है। विधि के पालनार्थ समयबद्ध दंड सुनिश्चित करना एक नितांत आवश्यक आवश्यकता है, जिससे हम और हमारे परिवार का स्वस्थ भरण-पोषण हो सके। लैंगिक समानता की दृष्टि से लक्ष्मी का पवित्र पर्व असमान सिद्ध हुआ है, घर की साक्षात साकार लक्ष्मी का अनादर कर निराकार लक्ष्मी को पूजना ढोंग मात्र है। घरेलू एवं सामाजिक हिंसा के बढ़ते प्रकरण, लिंग अनुपात की वर्तमान स्थिति हमारी संकीर्ण सोच का द्योतक है। "वसुधैव कुटुम्बकम् सदा परिवार से प्रारंभ होता है। अतः नारी को समानता का अधिकार हृदय से उपजना चाहिए न की कानूनी डंडे की फटकार और संबद्ध दंड से। उत्सवों पर बुजुर्गों के आशीष की पुरातन परंपरा है, परंतु वृद्ध आश्रमों की संख्या में होती वृद्धि, नव-जागृत समाज के मुख पर जबर्दस्त तमाचा है। विकास की अंधी दौड़ और गिरते नैतिक मूल्यों ने अपनों से अपनों को दूर किया है। कलियुग में पूंजी ने ईश्वर रूप धारण कर लिया है। पड़ोसी अब सदभाव नहीं ईष्या के केंद्र में होते हैं, उनसे पनपती गलाकाट स्पर्धा अब घर-घर में व्याप्त है, जिसका शीघ्र निवारण सामाजिक हित एवं परस्पर सामंजस्य हेतु आवश्यक है। भाई-चारे के विचार पर, हर भाई अपना चारा अलग करने में लगा है, जिसे पुनः संगठित करने का प्रयास ही भरत के भ्रातृ प्रेम को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि देना होगा।

खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं, मेरा प्रयास इस दीपावली को शुभ दीपावली बनाने का है, जो सभी पाठकों के समर्थन एवं सकारात्मक सशक्त प्रयास से ही संभव हो सकता है। यह विवेचना व्यक्तिगत सीमाओं में प्रस्तुत की गई है और किसी की भावना को आहत करने का प्रयास नहीं है। ■

# श्वासों का मोल



श्री प्रकाश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन का आधार है वायु,
प्राणी जगत का सार है वायु।
अदृश्य छवि हीन स्वरुप,
मंद मृदुल बहती निकुंज॥

मिश्रण यह अति
सूक्ष्म कणों का,
श्वांसों की माला बनकर।
सृष्टि को उन्मुक्त चलाती,
अद्भुत अचरज
इस वसुंधरा पर ॥

मानो तो ये चमत्कार है,
ना मानो तो बस बहती हवा ।
वेद पुराणों में मिलती है,
वायु देव की कई गाथा॥

जग में था अंधकार जब,
जल अग्नि ना वायु था।
नारायण ने विस्तार किया तब,
अपनी अनूठी माया का॥

नेत्रों से रवि का प्रकाश,
मुख से प्रकट हुई ज्वाला।
मन से उपजें चन्द्र सुहावन,
श्वांसों से शीतल धारा॥

योग सूत्र के दृष्टिकोण से
प्राणों का आयाम है वायु।
जीवन का यह मूलतत्व,
उर्जा का संचार है वायु॥

स्पर्शमात्र शीतल समीर का,
तन मन को पुलकित कर
जाती।
अमृत की रसधारा मानो,
झरकर मन को बहलाती॥

हर युग में जीव जगत ने,
वायु की महत्ता को जाना।
लिख गाथाएं पुराण,
इन्हें पंचतत्व माना॥

फिर आया वह कालखंड,
जिमसे विज्ञान को मान
मिला।
पहुँच गए हम चाँद पर,
अन्वेषण को पाषाण शिला॥

सृष्टि रचयिता ने दी है,
जीवो को कई अमूल्य भेंट।
पर्वत जंगल मिटटी
जल वायु अग्नि और रेत॥

संभव नही कहीं जीवन,
सौरमंडल के किसी और पिंड।
कहीं ज्वाला कहीं वायु रहित,
जीवन की न कहीं उम्मीद॥

इतना सबकुछ समझ बुझकर,
मानव बस अनजान बना।
लालच वश अँधा होकर,
अज्ञान-तिमिर में बंधा॥

जीवन का यह अर्थ नही है,
ग्रहण मात्र करते जाना।
बदले में है ये कर्त्तव्य,
हमको भी है कुछ लौटना॥

संतुलन ही वो नियम है,
जिस पर यह संसार टिका।
स्तम्भ है नीति-धर्म का,
संयम और मर्यादा॥

दशानन की लंका भी थी
कंचन,
अजेय, वैभवशाली।
ऋषि पुलस्त्य का पौत्र था वो,
नाना थे उसके सुमाली॥

अहंकार और मद में आकर,
जब उसने उपहास किया।
वायुपुत्र ने तब पूरी
लंका नगरी का नाश किया॥

वसुधा के आँचल में पलते,
भांति भांति के चेतन प्राणी।
साझा है अधिकार सभी का,
तरु वन वायु और पानी॥

श्वांसों का जो मोल समझ ले,
करुणा से भर जाता है।
प्रकृति के संरक्षण हेतु,
अपना कर्तव्य निभाता है॥



श्री सतशील क. कांबले
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कारगिल का अमर वीर

# कैप्टन नेइकेझाकुओ केंगुरुसे

## महावीर चक्र

कारगिल युद्ध भारतीय सैन्य इतिहास का वह गौरवशाली अध्याय है, जिसमें भारतीय सेना के वीर जवानों और अधिकारियों ने अदम्य साहस, शौर्य और सर्वोच्च बलिदान का परिचय दिया। इन्हीं अमर वीरों में एक नाम है कैप्टन नेइकेझाकुओ केंगुरुसे, जिन्हें प्यार से 'नेइबू' और उनकी यूनिट में 'निंबू साहब' के नाम से जाना जाता था। उनका जन्म 15 जुलाई 1974 को नागालैंड के कोहिमा जिले के नेरेमा गाँव में हुआ था। दस भाई-बहनों वाले बड़े परिवार में पले-बढ़े नेइबू ने कठिन परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त की। परिवार की सहायता के लिए उन्होंने पढ़ाई के दौरान शिक्षक के रूप में भी कार्य किया। आगे बढ़ने और परिवार का जीवन बेहतर बनाने के उद्देश्य से उन्होंने कंबाइंड डिफेंस सर्विसेज (CDS) की परीक्षा उत्तीर्ण की और देहरादून स्थित इंडियन मिलिट्री अकादमी में प्रवेश लिया। 12 दिसंबर 1998 को उन्हें भारतीय सेना में कमीशन मिला और वे आर्मी सर्विस कोर से जुड़े तथा 2 राजपूताना राइफल्स के साथ कार्यरत हुए।




सेना में शामिल हुए अभी कुछ ही महीने हुए थे कि देश को कारगिल युद्ध की चुनौती का सामना करना पड़ा। कैप्टन केंगुरुसे ने द्रास सेक्टर में अपनी बटालियन की घातक प्लाटून का नेतृत्व किया। टोलोलिंग हिल पर सफलता के बाद उनकी यूनिट को लोन हिल पर कब्जा करने का कठिन दायित्व सौंपा गया। 28 जून 1999 की वह रात भारतीय सैन्य इतिहास में उनके अद्भुत साहस और बलिदान के लिए सदैव याद की जाएगी। दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र, कड़ाके की ठंड और दुश्मन की भारी गोलाबारी के बीच लगभग सीधी चट्टान पर चढ़ना अत्यंत कठिन था। लेकिन कैप्टन केंगुरुसे ने अपने साथियों का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़ना जारी रखा।

अभियान के दौरान चट्टान अत्यंत फिसलन भरी थी। बेहतर पकड़ बनाने के लिए उन्होंने अपने जूते उतार दिए और नंगे पैर चट्टान पर चढ़ते हुए दुश्मन के बंकर की ओर बढ़े। उन्होंने रॉकेट लॉन्चर से दुश्मन के बंकर को नष्ट किया, लेकिन इसी दौरान उनके पेट में गोली लगी। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने अपना साहस नहीं खोया और अपने जवानों का नेतृत्व करते रहे। उन्होंने दुश्मन के दो और सैनिकों को मार गिराया। इसी संघर्ष के दौरान वे चट्टान से नीचे गिरकर वीरगति को प्राप्त हुए। उनके अदम्य साहस से प्रेरित होकर उनके साथियों ने दुश्मन की स्थिति पर सफलतापूर्वक कब्जा किया और अभियान को पूरा किया।

कैप्टन नेइकेझाकुओ केंगुरुसे का बलिदान भारतीय सेना की वीरता, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का अनुपम उदाहरण है। उनके सर्वोच्च बलिदान के लिए उन्हें मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। उनका जीवन यह संदेश देता है कि सच्चा सैनिक कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटता। उनकी वीरता केवल सेना के लिए ही नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक के लिए प्रेरणा का स्रोत है। कारगिल की बर्फीली चोटियों पर उन्होंने जो साहस और त्याग दिखाया, वह भारतीय इतिहास में सदैव अमर रहेगा।

### मेरी व्यक्तिगत स्मृति

*कारगिल युद्ध के दौरान मुझे भी अपनी ड्यूटी के सिलसिले में कैप्टन नेइकेझाकुओ केंगुरुसे जी के साथ कार्य करने का अवसर मिला। वे इन्फैंट्री से जुड़े थे और मेरी जिम्मेदारी उन्हें वाहन द्वारा उस स्थान तक पहुँचाने की थी, जहाँ तक वाहन जा सकता था। इसी दौरान उनसे मेरी मुलाकात हुई। आज जब मैं उनके शौर्य और सर्वोच्च बलिदान को याद करता हूँ, तो उनके साथ बिताया वह समय मेरे लिए एक अविस्मरणीय स्मृति है। ऐसे महान वीर के साथ कर्तव्य निभाने का अवसर मेरे लिए जीवनभर गर्व और सम्मान की बात रहेगा।*

*कैप्टन नेइकेझाकुओ केंगुरुसे, महावीर चक्र को शत-शत नमन। उनका बलिदान राष्ट्र की स्मृति में सदैव अमर रहेगा।*

*जय हिन्द* ■



श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

# बिहार का गौरव: लिट्टी-चोखा

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ हर राज्य की अपनी एक अनूठी सांस्कृतिक और खान-पान की पहचान है। जब बात बिहार की आती है, तो वहाँ की संस्कृति, सादगी और स्वाद का सबसे बड़ा प्रतीक 'लिट्टी-चोखा' है। लिट्टी-चोखा केवल बिहार का एक पारंपरिक व्यंजन नहीं है, बल्कि यह वहाँ के लोगों की जीवनशैली, इतिहास और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। आज यह प्रांतीय भोजन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है।

**लिट्टी-चोखा का इतिहास** – लिट्टी-चोखा का इतिहास बेहद समृद्ध और दिलचस्प है। माना जाता है कि मगध साम्राज्य के समय से ही इस व्यंजन का चलन रहा है। इसकी सबसे बड़ी खूबी इसका टिकाऊपन और सादगी है। प्राचीन काल में सैनिक या यात्री इसे अपने साथ ले जाते थे, क्योंकि यह कई दिनों तक खराब नहीं होता था। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, झाँसी की रानी और तात्या टोपे जैसे क्रांतिकारियों के लिए भी यह एक मुख्य भोजन था, क्योंकि इसे बिना बर्तनों के, जंगलों में उपलों की आग पर आसानी से पकाया जा सकता था। यह राजाओं से लेकर आम किसानों तक, सभी का पसंदीदा भोजन रहा है।

**बनाने की विधि और सामग्रियां**

लिट्टी-चोखा स्वाद और सेहत का एक बेहतरीन मिश्रण है। इसे बनाने की प्रक्रिया इस प्रकार है:

**लिट्टी:** यह गेहूं के आटे की गोल लोइयाँ (balls) होती हैं, जिनके अंदर 'सत्तू' (भुने हुए चने का आटा) का चटपटा मिश्रण भरा जाता है। इस सत्तू में सरसों का तेल, अजवाइन, कलौंजी (मंगरेल), नींबू का रस, बारीक कटा प्याज, लहसुन, अदरक और हरी मिर्च मिलाई जाती है। पारंपरिक रूप से इन लोइयों को गाय के गोबर के उपलों या कोयले की धीमी आग पर सेका जाता है, जिससे इसमें एक अनोखा सोंधापन आता है। सिकने के बाद इसे शुद्ध देसी घी में डुबोया जाता है।

**चोखा:** चोखा लिट्टी का मुख्य साथी है। इसे उबले या आग पर भुने हुए बैंगन, आलू और टमाटर को मैश करके (मसलकर) बनाया जाता है। इसमें कच्चा सरसों का तेल, बारीक कटा हुआ लहसुन, हरी मिर्च, धनिया पत्ती और नमक मिलाया जाता है। इसमें किसी भी प्रकार के कृत्रिम मसालों या तड़के का उपयोग नहीं होता, जिससे इसका प्राकृतिक स्वाद बना रहता है।

**पोषण और स्वास्थ्य के लिहाज से महत्व**

आजकल के फास्ट फूड के दौर में लिट्टी-चोखा एक स्वास्थ्यवर्धक विकल्प है।

**प्रोटीन से भरपूर:** सत्तू को प्रोटीन का पावरहाउस कहा जाता है, जो शरीर को तुरंत ऊर्जा देता है और पाचन क्रिया को दुरुस्त रखता है।

**कम तेल-मसाला:** चोखा पूरी तरह से उबला या भुना हुआ होता है, जिसमें तेल और मसालों का इस्तेमाल ना के बराबर होता है।



**सर्दियों का उत्तम भोजन:** यह शरीर को अंदर से गर्म रखता है और ग्रामीण इलाकों में इसे ऊर्जा का मुख्य स्रोत माना जाता है।

कभी बिहार के गांवों तक सीमित रहने वाला यह व्यंजन आज बड़े-बड़े पांच सितारा होटलों और अंतरराष्ट्रीय फूड फेस्टिवल्स की शोभा बढ़ा रहा है। भारत के विभिन्न महानगरों जैसे दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु के स्ट्रीट फूड में लिट्टी-चोखा बेहद लोकप्रिय हो चुका है। विदेशों में रहने वाले भारतीय प्रवासियों ने इसे अमेरिका, ब्रिटेन और दुबई जैसे देशों में भी मशहूर कर दिया है।

लिट्टी-चोखा सिर्फ पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि बिहार की माटी की खुशबू और वहाँ के लोगों के खुले दिल का परिचायक है। यह व्यंजन सिखाता है कि बिना तामझाम और न्यूनतम संसाधनों के भी एक सर्वोत्तम और स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जा सकता है। यह बिहार की समृद्ध विरासत का वह स्वाद है, जो एक बार जुबान पर चढ़ जाए, तो कभी भूलता नहीं है। ■



श्री हरिओम कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

# दूसरा पहलू

**"दस रुपये, दस रुपये, साहब, प्लीज़ मुझे एक दस रुपया दे दीजिए ना। मैंने कल से कुछ भी नहीं खाया है, साहब, प्लीज़, बस दस रुपये..."**

ये शब्द एक आठ-दस साल के बच्चे के थे, जो लाजपत नगर में पैदल यात्रियों के लिए बने रास्ते को पार करते समय अचानक हीं कहीं से प्रकट हो गया था और मुझसे भीख मांगने लगा था। दिल्ली की सड़कों पर या यूँ कहें अब तो छोटे बड़े तमाम शहरों के ट्रैफिक सिग्नल्स और पारगमन पथ पर भीख मांगने वाले ऐसे बच्चों या औरतों का दिख जाना बहुत ही आम बात है। उसकी आवाज़ में कुछ तो ऐसा था जिसने मुझे चौंका दिया था और मेरे बढ़ते हुए कदम अचानक ही रुक गए थे। मैंने उस बच्चे को ध्यान से देखा - एक दुबला-पतला-सा बच्चा, उसके बदन पर एक थोड़ी लम्बी-सी धुल से सनी हुई शर्ट थी जो जगह-जगह से



फटी-हुई थी, शर्ट की आस्तीनें उसके हाथों से लंबी थीं। चेहरे पर भी धुल की एक परत ने कब्जा जमाया हुआ था और ठण्ड की कंपकंपी उसके शरीर पर साफ़ देखि जा सकती थी क्योंकि जनवरी का महीना था और दिल्ली की सर्दी तो फिर जग-जाहिर है। सड़क की धूल में नहाया हुआ, लम्बे बिखरे बाल और उसकी बहती नाक; लंबे समय से ठंड से जूझने की उसकी कहानी बयां कर रहा था। चेहरे पर एक अजीब सी शांति, फटे होठों पर ठण्ड से पड़ी हुई पपड़ी, आंसू और कीच से भरी मोटी आँखे। कुछ तो बात थी उस लड़के में जो आज मैं उसे नजरअंदाज नहीं कर पाया था। जब मैं उस लड़के को देख रहा था, तो उसने मेरे पैर छूते हुए फिर से कहा -

"साहब, प्लीज़, बस एक दस रुपया, साहब... साहब बस एक दस रुपया, आपके लिए तो यह कुछ भी नहीं है, साहब प्लीज़...मैं कुछ खा लूँगा ... बहुत भूखा हूँ साहब"

मैं अक्सर ऐसे लड़कों और कभी-कभी गोद में बच्चा लिए महिलाओं को पहली बार की गुज़ारिश पर ही थोड़े-बहुत पैसे दे देता हूँ, हालाँकि मुझे पता है कि यह सही नहीं है, क्योंकि इसे भीख मांगने को बढ़ावा देने के तौर पर देखा जा सकता है, जो हमारे देश में अपराध है; लेकिन उनकी उनकी करुण आवाज़ें और मासूम चेहरे हमेशा मेरे दिल को दया से भर देते हैं और मैं ना चाहते हुए भी उन्हें पैसे देने के लिए मजबूर हो जाता हूँ। पर पता नहीं क्यूँ उस दिन मुझे भी क्या सूझी जो मैंने उसे सीधे पैसे देने के बजाए उस से कुछ बात करने की सोची। सायद इसलिए भी कि लाजपत नगर से प्रीत विहार की ओर जाने वाली मेरी एक बस छुट गई थी और अब मेरे पास दूसरी बस का इन्तजार करने के अलावा कोई और काम नहीं था – मैंने उस बच्चे से पूछा-

"मैं तुम्हें पैसे क्यों दूँ?"

लड़के ने जवाब दिया -

"प्लीज़ साहब, बस एक दस रुपया ही तो मांग रहा हूँ, आपके पास तो कितना होगा, एक दस रुपये से आपका क्या चला जाएगा।"

"हाँ, मेरे पास है, लेकिन फिर भी मैं तुम्हें क्यों दूँ?"

"प्लीज़ साहब, इससे आपको कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, लेकिन मेरी मदद हो जाएगी, मैं कुछ खा लूँगा साहब"

"नहीं, मैं नहीं दूँगा, जाओ यहाँ से, किसी और से मांगो"

मैंने यह दिखाने की कोशिश की कि मुझे उसे पैसे देने में कोई दिलचस्पी नहीं है। अचानक उसकी आवाज़ बहुत धीमी हो गई और वह थोड़ी दूर खड़े दूसरे लोगों की ओर भी देखने लगा; सायद उसे लगने लगा था कि उसे मुझसे कुछ नहीं मिलने वाला।

"प्लीज़ साहब..."

मैंने उससे पूछा- "तुम भीख क्यों मांगते हो?"

उसने मेरे सवाल का जवाब एक सवाल से ही दिया, " भीख ना मांगूं तो और क्या करूँ?"

मैंने कहा- "क्यों? तुम्हारे पास करने के लिए कुछ नहीं है? क्या तुम स्कूल जाकर कुछ सीख नहीं सकते, ताकि भविष्य में बेहतर ज़िंदगी

जी सको?"

उसने मेरी तरफ़ घूर के देखा और चिढ़े हुए आवाज़ में बोला - "ओ साहब, रहने दीजिए, अगर आप पैसे नहीं देना चाहते तो कोई बात नहीं, आप अपना रास्ता देखिए और मुझे मेरा काम करने दीजिए"

मुझसे मुँह फेरते हुए उसने बुदबुदाते हुए कहा, "एक और ज्ञानचंद आ गए, अपने शानदार भाषणों के साथ... क्या फटेली सुबह हुई है"

मैं थोड़ा हैरान रह गया... कुछ देर तक बिना हिले-डुले खड़ा रहा, फिर मैंने दोबारा उससे कहा-

"मेरे सवाल का जवाब दो"

इस बार, उसने गुस्से भरी नज़रों से मेरी तरफ़ देखा और कड़े शब्दों में जवाब दिया-

""मेरे किस स्कूल में जाने की बात कर रहे हैं आप? कौन सा स्कूल...? दो साल पहले, चुनाव के दिनों में, बहुत से लोग हमारे इलाके में आए थे। उन्होंने मेरे जैसे बच्चों के लिए स्कूल खोलने, बड़ों को काम देने, दो वक्त की रोटी, पीने का साफ़ पानी और रहने के लिए बेहतर माहौल देने जैसे कई वादे किए थे... लेकिन उसका क्या फ़ायदा हुआ?... चुनाव खत्म होते ही... सब गायब हो गए। कई नेता लोग हमारी झुग्गी में वोट मांगने आए थे, लेकिन चुनाव के बाद, नेताओं की छोड़िए, उनके कुत्ते तक हमसे मिलने नहीं आए। जब चुनाव के नतीजे आए, तो मैं बहुत खुशी-खुशी अपने बाप के पास गया और पूछा – पापा, पापा, हमारा वाला स्कूल कब से चालू होगा? और मेरी बात सुनकर वे ज़ोर से हँस पड़े थे। उन्होंने पूछा – "किसने कहा कि हमारे लिए स्कूल चालू होने वाला है?" मैंने उन्हें उन अलग-अलग "नेताओं" के वादों की याद दिलाई, जो चुनाव के समय हमारे पास आए थे। और उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा, उन वादों को भूल जाओ, वे वादे पूरे होने के लिए नहीं थे। तुम हर पाँच साल में उन लोगों को देखोगे; मेरी अपनी पचास साल की ज़िंदगी ऐसे ही वादे सुनते हुए गुज़र गई... लेकिन मैंने कभी हमारे लिए कोई स्कूल खुलते नहीं देखा... हाँ, एक बार कुछ लोग आए थे और कहा था कि वे गरीब बच्चों के लिए स्कूल खोलने आए हैं, तब मैं कोई दस-बारह साल का रहा होऊँगा। उन्होंने स्कूल की इमारत का काम भी शुरू किया था। काम एक हफ़्ते तक चला, और फिर अचानक, आठवें दिन, वह अधूरी बनी इमारत ढह गई। और उस दिन से आज तक, चालीस साल बीत चुके हैं, लेकिन किसी ने भी उस स्कूल की इमारत को दोबारा बनाने की कोशिश नहीं की।" वे कुछ देर चुप रहे, उनकी आँखों से आँसू बहने लगे और फिर उन्होंने कहा - "तो बेटा, इसे भूल जाओ, बस वही करते रहो जो तुम करते आए हो... जाओ और कुछ पैसे कमाओ... अगर कभी स्कूल खुला, तो मैं तुम्हें ज़रूर स्कूल भेजूँगा।" लेकिन मुझे सच का एहसास हो गया था कि हमारे लिए ऐसा स्कूल कभी नहीं खुलेगा। और इस उम्र में मेरे पास बस एक ही काम बचा है, जिससे मैं चार पैसे कम सकता हूँ - भीख माँगना...""

उसने ये सब किसी रटे हुए तोते की भांति एक ही सांस में कह डाला था और फिर मेरी किसी प्रतिक्रिया की परवाह किये बिना ही भीख मांगने के लिए दूसरे आदमी की तरफ मुड़ गया था।

उसकी बातें मेरे दिल में चुभ गईं। उसके ज़ख्मों को कुरेदने का मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने उसे कुछ पैसे देने के लिए अपना पर्स निकाला। और फिर पूछा –

"लेकिन, क्या तुम्हें पता नहीं कि हमारे देश में भीख मांगना जुर्म है? पुलिस तुम्हें इसके लिए जेल ले जा सकती है"

वह गुस्से में मेरी तरफ मुड़ा और कड़वाहट से बोला – "मेरा दिमाग मत खराब करो, साहब। जाओ, अपना काम करो"

लेकिन फिर मेरे हाथ में पर्स देखकर उसकी आवाज़ थोड़ी नरम पड़ गई। वह समझ गया कि मैं उसे कुछ पैसे देने वाला हूँ। इसलिए, वह बहुत तमीज़ से बात करने लगा। उसने कहा-

"कैसा जुर्म, साहब? भीख माँगना भी कोई जुर्म होता है भला ! पुलिस लोग के पास वैसे ही कितने काम हैं जो उनसे होते नहीं, कितने ही जुर्म हैं जो उनसे रोके नहीं जाते, वो भी क्या ऐसे छोटे-मोटे चीजों में मगजमारी करेंगे आप भीख मांगने की बात कर रहे हैं? रेप, लूट, मर्डर, हत्या, ये सब तो रोज़ के मौसम के हाल-चाल जैसे हो गए हैं। लेकिन इन्हें रोकने के लिए कोई कुछ नहीं करता। रोज़ बसों में लड़कियों के साथ छेड़छाड़ होती है और वो भी पढ़े-लिखे, समझदार लोग करते हैं, लेकिन कोई इसके खिलाफ आवाज़ नहीं उठाता। चीज़ों की भारी कालाबाज़ारी और जमाखोरी होती है, लेकिन किसी को इसकी परवाह नहीं। आपको हैरानी हो रही होगी कि मुझ जैसा छोटा बच्चा इतना सब कुछ कैसे बोल रहा है! हैरान मत होइए साहब, यह मेरी ज़िंदगी है जिसने मुझे इतनी कम उम्र में ये सब सिखाया है; कुछ बातें मैंने खुद समझी हैं और कुछ आप जैसे लोगों से सीखी हैं जो बसों और सड़कों पर बातें करते हैं" और वह मुस्कुराते हुए मेरे वॉलेट की तरफ देखने लगा।

आठ-दस साल के उस बच्चे ने अपनी सीधी-सादी बातों से मुझे चुप करा दिया था। इसके बाद मैं कुछ नहीं कह पाया... मुझे उसके सामने बहुत शर्मिंदगी महसूस हो रही थी... और उसका धूल-धूसरित चेहरा गर्व की चमक से दमक रहा था। इससे पहले कि मैं उससे कुछ और कह पाता, उसने फिर बहुत तमीज़ से मुझसे कहा, "आपने मुझसे पुलिस से डरने के लिए कहा था, है ना? ज़रा सड़क के दूसरी तरफ देखिए। और सड़क पर बनी पैदल यात्रियों के लिए बनी लाइनें भी देखिए।" मैंने देखा कि एक कार सफ़ेद और काली लाइनों को पार कर गई थी। वहाँ एक डी.टी.सी. बस भी खड़ी थी जो पैदल चलने वालों के लिए बनी लाइन को पूरी तरह घेरे हुए थी और उनका रास्ता रोक रही थी। मैंने सड़क के दूसरी तरफ़ देखा, तो दो ट्रैफ़िक पुलिस वाले आपस में बातें कर रहे थे; मैंने देखा कि उनमें से एक सड़क पर पान की पीक थूक रहा था और हँस रहा था। लेकिन उनमें से कोई भी ट्रैफ़िक नियमों का नहीं सोच रहा

था। उस लड़के ने फिर कहा, "साहब, मुझे इन पुलिस वालों से डरने की ज़रूरत नहीं है; कई बार तो ये हमसे हमारी थोड़ी-बहुत भीख की कमाई भी छीन लेते हैं, इनसे क्या ही डरना"

मेरे लिए यह सब बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल हो रहा था। उस लड़के की हर बात अर्जुन के तीर की तरह लग रही थी, जिसका मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मुझे सच में इतना दुख और बुरा लगा कि मैं उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता। मैंने उस लड़के की तरफ मुड़कर पूछा –

"अगर मैं तुम्हें स्कूल में दाखिला दिला दूं, तो क्या तुम भीख मांगना बंद कर दोगे और रोज़ स्कूल जाओगे?"

उसने बिना एक पल सोचे कहा- "नहीं"

उसके जवाब से मैं हैरान रह गया। मैंने पूछा, "क्यों?"

उसने कहा- "मेरे परिवार का क्या होगा, साहब? मेरा बाप अब रहा नहीं। माँ भी बीमार है, मेरे दो छोटे भाई-बहन हैं। उन्हें कौन खिलाएगा?, पैसा कहा से आएगा, स्कूल जाने से पैसे नहीं बनते"

ये शब्द मेरे लिए किसी बिजली के झटके से कम नहीं थे, जिसने मेरी दरियादिली की दुनिया को ही तोड़कर रख दिया। किसी एक बच्चे की पढ़ाई की ज़िम्मेदारी लेना अलग बात है, लेकिन एक अनजान पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी लेना...ऐसा सोच पाना भी मेरे दयालु और उदार दिल के लिए भी बहुत बड़ी बात थी। उस लड़के ने सच में मुझे चुप करा दिया। और मेरे पास उससे पढ़ाई-लिखाई के बारे में बात करने के लिए कुछ नहीं बचा।

मैंने उससे पूछा- "तुम एक दिन में कितना कमा लेते हो?"



उसने कहा- "दो-ढाई सौ, कभी-कभी तीन-चार सौ, और कभी बस चालीस-पचास"

मैंने थोड़ी देर सोचा और फिर कहा, "अगर मैं तुम्हें अभी पाँच सौ रुपये का नोट दूं, तो क्या तुम भीख मांगना बंद कर दोगे... कम से कम आज के लिए?"

उसने थोड़ी देर सोचा और कहा- "ठीक है, लेकिन सिर्फ़ आज के लिए"

मैंने उसे पाँच सौ रुपये का नोट दिया। उसने मुस्कुराते हुए उसे लिया, मेरे पैर छूकर धन्यवाद कहा और जाने लगा।

मुझे थोड़ी राहत महसूस हुई; जब से मैंने उससे बात करना शुरू किया था, मेरा दिल बहुत भारी हो गया था, लेकिन अब उसे पैसे देकर मुझे थोड़ा हल्का लग रहा था। कहीं न कहीं मैं मन हीं मन इतरा भी रहा था कि ज्यादा नहीं तो कम से कम एक दिन के लिए तो मैंने इस बच्चे को भीख मांगने से रोक दिया, एक अच्छा काम किया, एक अच्छा दिन उस बच्चे के नाम किया।

अभी मैं अपने झूठे गर्वित मनोभाव में खोया हुआ आगे बढ़ने हीं वाला था कि वह फिर मेरे पास आया और बोला-

"साहब, मैंने सिर्फ़ आज के लिए भीख न मांगने का वादा किया है। लेकिन फिर कल से मैं भीख मांगूंगा ही...मैं भीख मांगने को मजबूर हूं, साहब, मुझे अपने परिवार का पेट पालना है। और ऐसा रोज़ तो नहीं होगा कि मैं आपसे या आप जैसे भले आदमी से मिलूं जो मुझे पाँच सौ रुपये दे दे..."

इतना कहकर वह सड़क पार करने के लिए भागा। अचानक, सिग्नल हरा हो गया और एक कार उस लड़के को टक्कर मारने ही वाली थी, एक्सीडेंट होते-होते बचा। लड़का मेरी तरफ़ मुड़ा और भागते हुए बोला- "चिंता मत कीजिए साहब, मुझ जैसे गरीब लड़कों को इस गंदी ज़िंदगी से इतनी आसानी से छुटकारा नहीं मिलता, ऐसे नहीं मरते हम, रोज मरते हैं..."

उसकी बातों ने मुझे सुन्न कर दिया। उसके आखिरी शब्द मेरे कानों में गूंजने लगे... उसकी बातों ने आज सच का एक दूसरा पहलू दिखलाया था मुझे। हममें से हर कोई अपराध की आलोचना करता है, लेकिन हममें से कितने लोग समाज से अपराध को खत्म करने की कोशिश करते हैं? बेशक, हम भीख मांगने से नफ़रत करते हैं और सोचते हैं कि भीख मांगना एक पेशा बन गया है। और हमें इसे रोकना चाहिए... लेकिन ऐसे कई लड़के और परिवार हैं जो भीख मांगते हैं, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि उनके पास करने के लिए कुछ और नहीं है, वो मजबूर हैं। हम जो देखते हैं, सुनते हैं, उस पर टिप्पणी करते हैं, सच को गहराई से देखे और समझे बिना...लेकिन हर तथ्य का, हर घटना का एक दूसरा पहलू भी होता है, जिसे हम अपनी सुविधा के लिए अक्सरहां नजरअंदाज कर देते हैं।

अब मुझे एहसास हुआ कि शायद उसे पाँच सौ रुपये देना सही नहीं था, क्योंकि मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मैंने उसे पैसे नहीं दिए, उसका कुछ भला नहीं किया, बल्कि इसके उलट ऐसा लगा मानो मैंने खुद उसकी ज़िंदगी का एक दिन चुरा लिया हो। मैं काफी देर तक वहाँ अकेला खड़ा रहा और उस बच्चे की बातें मेरे दिमाग में गूँजती रहीं-

"चिंता मत कीजिए साहब, मुझ जैसे गरीब लड़कों को इस गंदी ज़िंदगी से इतनी आसानी से छुटकारा नहीं मिलता, ऐसे नहीं मरते हम, रोज मरते हैं..." ■



श्री हेमन्त चन्द
डी.ई.ओ. एवं निजी सचिव, प्र.नि.ले.प.

# महाराष्ट्र मानसून ट्रेक

महाराष्ट्र में मानसून के दौरान सह्याद्री की पहाड़ियां हरी-भरी हो जाती हैं। कलसुबाई, हरिश्चंद्रगढ़, राजमाची, अंधरबन और विसापुर यहां के सबसे प्रसिद्ध मानसून ट्रेक हैं, जो रोमांच प्रेमियों और पर्यटकों को अपनी प्राकृतिक सुंदरता, झरनों और बादलों से घिरे रास्तों से आकर्षित करते हैं। इस मानसून में आपको समय निकालकर इन ट्रेक्स को अवश्य घूमना चाहिये।

बरसात के मौसम में महाराष्ट्र के किलों और पहाड़ों की खूबसूरती देखने लायक होती है। यहाँ कुछ बेहतरीन ट्रेक की सूची दी गई है:

**कलसुबाई चोटी**

कलसूबाई चोटी महाराष्ट्र का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 1,646 मीटर (5,400 फीट) है। सह्याद्री पर्वत श्रृंखला (पश्चिमी घाट) में स्थित इस चोटी को "महाराष्ट्र का एवरेस्ट" भी कहा जाता है। इसके शीर्ष पर कलसूबाई देवी का एक प्रसिद्ध मंदिर स्थित है।

**मुख्य विशेषताएँ**

**ऊंचाई:** 1,646 मीटर (5,400 फीट)

**स्थान:** अहमदनगर (अहिल्यानगर) जिला और नासिक जिले की सीमा, महाराष्ट्र

**श्रेणी:** सह्याद्री पर्वतमाला (पश्चिमी घाट), कलसूबाई-हरिश्चंद्रगड वन्यजीव अभयारण्य

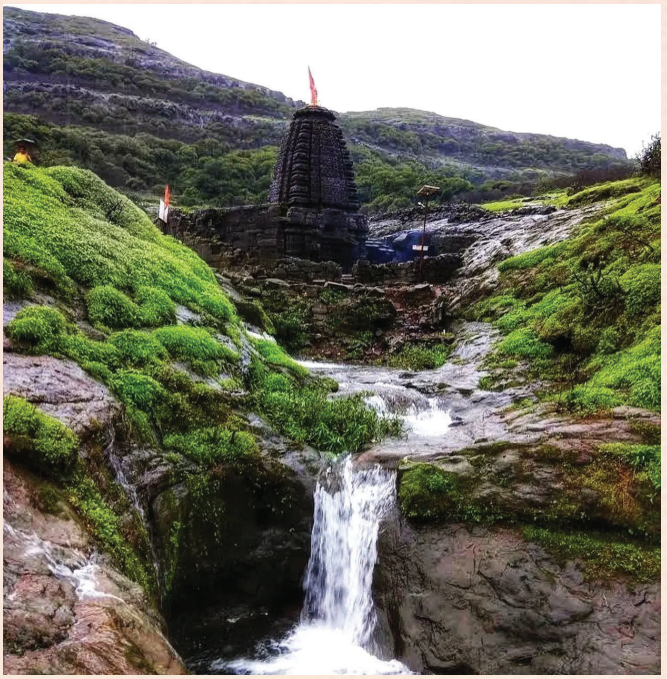
**ट्रैकिंग की जानकारी**

**आधार शिविर :** बारी गांव से मुख्य ट्रैक शुरू होता है।

**दूरी व समय:** ट्रैक की लंबाई करीब 6.6 किलोमीटर है। ऊपर जाने और आने में लगभग 6 से 7 घंटे का समय लगता है।

**कठिनाई स्तर:** मध्यम रास्ते को आसान बनाने के लिए चट्टानों और





ढलानों पर लोहे की सीढ़ियां लगाई गई हैं।

**सर्वश्रेष्ठ समय:** सितंबर से फरवरी (सर्दियों और मानसून में प्रकृति का सुंदर नजारा दिखता है)।

**हरिश्चंद्रगढ़ किला**

हरिश्चंद्रगढ़ किला महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में सह्याद्री पर्वतमाला में 4,671 फीट की ऊंचाई पर स्थित एक प्राचीन पहाड़ी किला है। छठी शताब्दी (कलचुरी राजवंश) में बना यह दुर्ग अपने भव्य हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर, अद्भुत कोंकण कड़ा और रोमांचक ट्रेकिंग रास्तों के लिए प्रसिद्ध है।

**मुख्य विशेषताएं**

**कोंकण कड़ा:** एक अर्ध-गोलाकार लटकती हुई चट्टान जो कोंकण क्षेत्र का खूबसूरत नजारा दिखाती है।

**हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर:** हेमाडपंथी शैली में बना प्राचीन शिव मंदिर।

**तारामती चोटी:** किले का सबसे ऊंचा पॉइंट, जहां से आसपास की पहाड़ियां दिखती हैं।

**सप्ततीर्थ पुष्करिणी:** मंदिर के पास बनी एक ऐतिहासिक और सुंदर झील।

**यात्रा से जुड़ी जानकारी**

**स्थान:** अहमदनगर (अब अहिल्यानगर) जिला, महाराष्ट्र।

**दूरी:** पुणे से लगभग 166 किमी और मुंबई से 218 किमी दूर।



**बेस्ट टाइम:** मानसून और सर्दियों के महीने (जुलाई से फरवरी)।

## विसापुर किला ट्रेक

विसापुर किला ट्रेक महाराष्ट्र के सह्याद्री पर्वतमाला में स्थित एक बेहद लोकप्रिय ट्रेक है। समुद्र तल से 3,556 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह किला मानसून के दौरान सीढ़ियों से बहते पानी और झरनों वाले रास्तों के लिए जाना जाता है, जो मुंबई से लगभग 105 किमी और पुणे से 65 किमी की दूरी पर है।

### मुख्य जानकारी

**ऊंचाई:** 3,556 फीट (1,084 मीटर)

**कठिनाई स्तर:** मध्यम

**अवधि:** 2 से 3 घंटे की चढ़ाई (एक दिन का ट्रेक)

**आधार गांव (Base Village):** भाजे या पाटन गांव

**सर्वोत्तम समय:** मानसून (जून से अक्टूबर)

**ट्रेक मार्ग और अनुभव**

**शुरुआत:** ट्रेक की शुरुआत आमतौर पर भाजे गांव से होती है (जो प्रसिद्ध भाजा गुफाओं के पास है)।

**मानसून का नज़ारा:** बारिश के दिनों में किले की सीढ़ियां ही एक बहते हुए झरने का रूप ले लेती हैं, जिसपर चढ़ना एक रोमांचक अनुभव होता है।

**शीर्ष पर आकर्षण:** ऊपर पहुंचकर आपको एक बड़ा हरा-भरा पठार, प्राचीन दीवारें, पानी के कुंड और चारों तरफ बादलों से घिरे पहाड़ों का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

**जरूरी बातें और सुझाव**

**पानी और भोजन:** किले के ऊपर पीने का पानी नहीं मिलता है। आधार गांव से ही पानी और कुछ स्नैक्स साथ रखें।

**जूते:** अच्छी पकड़ वाले ट्रेकिंग जूते पहनें क्योंकि मानसून में सीढ़ियां और रास्ते फिसलन भरे हो जाते हैं।

**कैसे पहुंचें:** ट्रेन से मालवली स्टेशन उतरकर वहां से ऑटो या टैक्सी द्वारा भाजे गांव (बेस विलेज) पहुंच सकते हैं।

## राजमाची किला

राजमाची किला महाराष्ट्र के सह्याद्री पर्वत श्रृंखला (पश्चिमी घाट) में लोनावला और कर्जत के बीच स्थित एक बेहद खूबसूरत और ऐतिहासिक पहाड़ी किला (गिरीदुर्ग) है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई लगभग 2,710 फीट (826 मीटर) है। इस किले की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें श्रीवर्धन और मनरंजन नाम के दो जुड़वां बालेकिल्ले (तटबंदी) शामिल हैं, जो इसके नीचे बसे 'उधेवाडी' नामक एक विस्तृत पठार (माची) से घिरे हुए हैं।

### मुख्य आकर्षण और देखने योग्य स्थान

**श्रीवर्धन किला (बालेकिल्ला):** यह दोनों में से अधिक ऊंचाई (2,710 फीट) पर स्थित है। इसका निर्माण मुख्य रूप से दुश्मन पर नजर रखने और पहरेदारी के उद्देश्य से किया गया था।

**मनरंजन किला (बालेकिल्ला):** यह थोड़ा कम ऊंचाई (2,510 फीट) पर स्थित है। यहां आपको प्राचीन सैन्य बैरक, पानी के हौद और पुरानी वास्तुकला के अवशेष देखने को मिलते हैं।

**काल भैरवनाथ मंदिर:** दोनों किलों के बीच पठार पर स्थित यह एक प्राचीन मंदिर है, जिसकी स्थानीय लोगों में बड़ी मान्यता है।

**कोंढाणा बौद्ध गुफाएं:** यदि आप कर्जत वाले रास्ते से ट्रेक करते हैं, तो रास्ते में आपको ये ऐतिहासिक बौद्ध गुफाएं और झरने देखने को मिलते हैं।

**ट्रेकिंग रूट:** राजमाची पहुंचने के मुख्य रूप से दो रास्ते हैं, जो शुरुआती और अनुभवी दोनों तरह के ट्रेकर्स के लिए उपयुक्त हैं:

**लोनावला मार्ग (आसान):** लोनावला के तुंगार्ली बांध से उधेवाडी गांव तक करीब 16 किमी का एक कच्चा रास्ता है। इस रूट पर चढ़ाई बहुत कम और सीधी है। सूखी ऋतु में ऑफ-रोड गाड़ियों (जैसे सुमो या बोलेरो) से सीधे बेस विलेज तक भी पहुंचा जा सकता है।

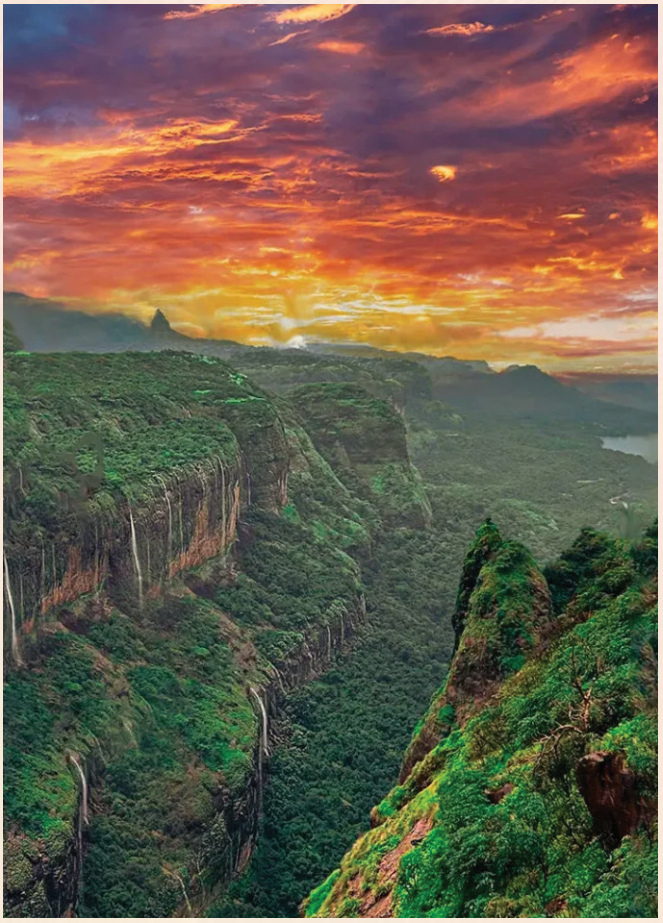
**कर्जत/कोंढाणा मार्ग (कठिन):** कर्जत के कोंढाणा गांव से शुरू होने वाला यह मार्ग लगभग 8 किमी लंबा है, जिसमें घने जंगलों और खड़ी चढ़ाई से होकर गुजरना पड़ता है। इस रास्ते से ऊपर पहुंचने में करीब 2.5 से 3 घंटे का समय लगता है।

**यात्रा का सबसे अच्छा समय**

मानसून (जून से सितंबर): यह समय इस जगह को एक जादुई रूप दे देता है। चारों तरफ फैली हरी-भरी वादियां, घने बादल और रास्ते में मिलने वाले अनगिनत झरने इसे बेहद खूबसूरत बनाते हैं।

**जुगनू का मौसम (मई से जून):** मानसून शुरू होने से ठीक पहले (प्री-मानसून), राजमाची के जंगलों में लाखों की संख्या में जुगनू चमकते हैं, जिसे देखने के लिए देश भर से लोग नाइट ट्रेकिंग और कैंपिंग के लिए आते हैं।





## अंधरबन ट्रेक

अंधरबन ट्रेक महाराष्ट्र में पुणे के पास ताम्हिनी घाट क्षेत्र में स्थित एक बेहद खूबसूरत और घना जंगल ट्रेक है। इसका शाब्दिक अर्थ "अंधेरा जंगल" है। यह 13 से 14 किलोमीटर लंबा और मुख्य रूप से ढलान वाला ट्रेक है, जिसे पूरा करने में लगभग 5 से 6 घंटे लगते हैं।

**मुख्य विशेषताएं और जानकारी**

**स्थान:** ताम्हिनी घाट, मुलशी, महाराष्ट्र (पुणे से लगभग 70 किमी और मुंबई से 120 किमी दूर)।

**शुरुआत और अंत:** यह ट्रेक पिंपरी गाँव से शुरू होता है और भीरा डैम के बैकवाटर पर समाप्त होता है।

**कठिनाई स्तर:** आसान से मध्यम , यानी शुरुआती ट्रेकर्स के लिए भी यह काफी उपयुक्त है।

**सर्वोत्तम समय:** जून से अक्टूबर (मानसून और उसके ठीक बाद का समय) जब जंगल हरा-भरा और झरनों से भर जाता है।

**ट्रेक के दौरान क्या दिखता है**

1. घने पेड़ों के कारण यहाँ दिन में भी हल्की छाँव और अंधेरा सा माहौल रहता है।
2. रास्ते में कई छोटे-बड़े झरने, नदियाँ और मनमोहक हरियाली मिलती है।
3. कुंडलिका घाटी और भीरा बांध के बैकवाटर के शानदार नज़ारे दिखाई देते हैं। ■

# सपना और हकीकत



श्री एन. डी. दलवी
लेखापरीक्षक

कितनी हसीन होती है...
हकिकत से ख्यालों की दुनिया
एक बार मेरे दिल में
यह ख्याल आया।
सपनों से सपने संजोए जाते है,
खुशियाँ लूट दर्द भूलाए जाते है।

वहाँ न दुख होता है ना कोई गम....
वहाँ ना शिकवा होता है
ना कोई गिला।
ना होते है न् थमने वाले आँसू...
ना ताकती है आँखे किसी की राह,
दिल में होती है चाहत की राह।

ये वही ख्यालों की दुनियाँ है....
जहाँ मुस्कुराते लम्हों को देखकर,
आप ही सँवरते है ख्यालों के गुलशन,
फिर भ्रम के काँटो में उलझकर,
बिखर जाते है ख्यालों के गुलशन।

ये वही ख्यालों की दुनिया है.....
जहाँ प्यार के तराने होते है,
खुशियाँ के अफसाने होते हैं।
ना तनहाई होती है,
ना साधी जाती है चुप्पी,

ना घुटन महसुस होती है ना ही खामोशी।
ना होती है असहाय, बेबस जुदाई....
होती है बस प्यार में जिंदगी समाई।
आँखों में मोहब्बत होती है पल-पल में...
सीने में हलचल होती है हर एक पल में।

होती है यूँ तो, सपनों की,
ख्यलों की दुनियाँ पल दो पल की।
जब.. टूट जाता है सपना,
तब टूट जाती है ख्यलों की दुनियाँ...
कितनी बनावटी, कितनी हसीन होती है,
हकीकत से ख्यालों की दुनिया..
एक बार मेरे दिल में ये ख्याल आया।

# भगवान तो गये काम से!



श्री कुमार सौरभ
लेखापरीक्षक

कहते हैं कि किसी इंसान की झूठी कसम कोई खा ले, तो जिसके नाम से ये कसम उठायी गयी है, उसपर या तो कोई घोर विपदा आन पड़ती है या यह भी हो सकता है कि उसकी जान तक पर बन आए। सोचिए, अगर ऐसी ही झूठी कसमें भगवान के नाम से उठाई गईं तो? क्या होगा भगवान का? भगवान जी तो गए काम से! है न? लेकिन दिक्कत ये है कि हम भगवान के बारे में पूर्णतः नहीं जानते (वैसे मेरा तो निजी विचार है कि हम अंशमात्र भी नहीं जानते) कि वे क्या हैं, कैसे हैं, कौन हैं और क्या होता होगा उनका?

ये सब बातें आपको उटपटांग लग रही होंगी। है न? लेकिन यह विमर्श प्रकट करने का मेरे पास ठोस कारण है; और वह कारण है एक प्रसंग। मैं अपने साथ पूर्व में घटित एक सच्ची घटना आप सब से साझा करने जा रहा हूँ, आँखें फाड़कर पढ़िएगा।

घटना कुछ यूँ है कि मुंबई के ही किसी इलाके में मैं किसी काम से बस द्वारा जा रहा था। नियत बस स्टॉप पर मैं उतरा और ज्योंहि मंज़िल की तरफ बढ़ा कि उसी बस से उतरते हुए एक सरदार जी लपकते हुए मेरे पीछे आए और मुझसे पूछने लगेः "भाई साहब यहाँ पर कोई गुरुद्वारा है क्या?" मुझे लगा उनको अरदास लगाने या लंगर चखने जाना होगा उधर, किन्तु चूँकि मैं भी उस इलाके में नया था, तो मैंने उनसे माफ़ी मांगते हुए बोला : मुझे इसकी जानकारी नहीं है भाई साहब, आप किसी और से पूछ लें।

इतना कहकर मैं आगे को चल दिया, लेकिन वो फिर भी मेरे ही पीछे आए और मुझसे कहने लगे दरअसल एक गुरुद्वारा है तो इधर लेकिन वो अभी बंद है और मुझे जाना ज़रूरी है, तो आप आसपास कोई और गुरुद्वारे का पता बता सकते हैं क्या? मैंने वापस से उनसे माफ़ी मांगते हुए कहा मुझे जानकारी नहीं है, आप किसी और से पूछिए।

ऐसा बोलकर मैं फिर आगे बढ़ा, लेकिन सरदार जी जैसे मानने को ही तैयार नहीं थे। वो फिर मेरे पीछे आए और अबकी बोले भाई साहब असल बात ये है कि मेरी बेटी का देहांत हो गया है और मुझे फ़ौरन पेन (पुणे के पास का एक शहर) के लिए निकलना है। बेटी के अंतिम संस्कार हेतु मुझे कुछ कपड़े खरीदने हैं और मेरी समस्या यह है कि मेरे पास पैसे नहीं हैं। सुनकर मुझे दुःख हुआ, लेकिन अगले ही पल मैंने कहा इसमें मैं आपकी क्या ही सहायता कर सकता हूं? उन्होंने कहा अगर इधर गुरुद्वारा होता तो वहाँ जाकर सहायता मांग लेता, लेकिन है ही नहीं तो क्या आप मुझे पैसे दे सकते हैं?

आगे उन्होंने कहा देखिए मैं एक सरदार हूँ, और इस नाते मुझे भीख मांगना मुनासिब नहीं लगता। मेरा यहाँ कोई नहीं है, आप मुझे कैश दे दें तो बदले में मैं आपको जी-पे कर दूंगा। मैंने कहा : सरदार जी मेरे पास कैश नहीं होते, क्योंकि मैं ख़ुद भी ज़्यादातर ऑनलाइन ट्रांजैक्शन ही करता हूँ। वो गिड़गिड़ाने लगे आपके पास ए.टी.एम. कार्ड होगा, तो उससे निकाल कर दे दीजिए, बड़ी मेहरबानी होगी आपकी मुझपर।

उन्होंने फिर से दोहराया : बेटी ना मरती तो मैं ऐसे ना करता, सरदार हूँ, भरोसा करिए मेरा। मुझे लगा वास्तव में ये ज़रूरतमन्द हैं। मैंने जेब





से 500 रूपए निकाल कर उनको दिए और बोला कि कर दीजिए मुझे जी-पे...वो बोले इतने में क्या होगा मुझे 3800 की ज़रूरत है तो पूरे दे दीजिए, मैं आपको जी-पे करता हूँ। मैंने कहा मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं और ना ही ए.टी.एम. कार्ड है, इसलिए इतना ही रखिए।

वो इंसान वापस से बोला : ठीक है, कम-से-कम 1000 तो कर दीजिए। मैंने फिर उनको 500 और दिए और बोला बस अब आप मुझे 1000 रूपए जी-पे कर दीजिए, मुझे भी जाना है। आपको हैरत होगी उसका जवाब सुनकर, उसने बोला कि मैं आपको घर पहुँचते ही पैसे भेज दूंगा, क्योंकि मेरा फ़ोन अभी डिस्चार्ज्ड है, आप अपना नंबर मुझे लिखवा दीजिए।

मैंने बोला ये तो आप ग़लत कर रहे हैं, अभी बोला था कि जी-पे करेंगे और पैसे मिलते ही आप बहाने बनाने लग गए! उसने मुझसे बोला : वाहेगुरु की कसम भाईसाहब, मैं एक सरदार हूँ और आपने सरदार को पैसे दिए हैं, इत्मीनान रखिए आपके पैसे कहीं नहीं जायेंगे। इतना कहकर उसने बैग में से पेन और पेपर निकाला और मेरा नंबर पूछा, मैंने बताया, लेकिन वो लिख नहीं पा रहे थे क्योंकि पेन चल ही नहीं रहा था। उन्होंने दूसरा पेन निकाला, वो भी नहीं चल रहा था। मैं अब खीज गया था उनपर, मैंने कहा आप मेरे पैसे लौटा दें, आप कुछ ठीक नहीं लग रहे मुझे, क्योंकि आपका फोन डिस्चार्ज्ड है, पेन चल नहीं रहा। हो क्या रहा है ये?

वो फिर से वाहेगुरु को बीच में लाते हुए कहते हैं, आप मेरा नंबर लिख लें और उसपर मुझे टेक्स्ट कर दीजिए, मैं आपको पैसे भेज दूंगा घर पहुंचते ही। ख़ैर, मैंने उनका नंबर लिखा और मौके से ही वो नंबर मिलाया । कोई हलचल नहीं हुई, अमूमन डिस्चार्ज्ड होकर स्वीच्ड ऑफ होने पर प्रॉम्प्ट आ ही जाता है कॉल लगाने वक्त कि जिस ग्राहक तक आप पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं, वो फिलहाल बंद है। ऐसा कोई प्रॉम्प्ट ना सुनकर मैंने उनसे पूछा कि नंबर सही तो लिखवाए हैं न? उन्होंने जेब से क्वेर्टी की-पैड वाला पुराना फोन निकाल कर दिखाया कि देखो भाई साहब इसकी बैटरी डेड है, आप बेवजह शक न करें, सरदार पर भरोसा रखें।

इतना कह कर वो इंसान रोड क्रॉस कर जाता है, मैंने उसको कौतूहल से अंत तक देखा और आगे जो देखा उससे मेरी आँखें फटी रह गईं।

वो जैसे ही रोड क्रॉस करता है, एक बाइक से आदमी आता है और वो सरदार उसी बाइक पर बैठ जाता है और निकल जाता है, जबकि मैंने साफ़-साफ़ देखा था कि सरदार ने हाथ देकर बाइक को नहीं रूकवाया था। मुझे यह समझते देर न लगी कि दोनों ठग थे और वो मुझे चूना लगाकर चले गए हैं।

ख़ून-पसीने की मेरी कमाई जाने का तो दुःख तो था ही, लेकिन उससे भी ज़्यादा दुःख इस बात का हुआ कि उसने मुझे ईश्वर के नाम पर छला और किसी की जान का मज़ाक बनाकर ठगा। मैं पूरे रास्ते यही सोचता रहा कि भगवान ने ऐसा होते देखा क्यूँ? मैंने तो बड़े ही निश्चल भाव से उसकी मदद की, लेकिन ईश्वर के नाम पर ठगे जाने के बावजूद ख़ुद ईश्वर क्यूँ नहीं आए मुझे बचाने? यह प्रश्न आप सब के लिए भी है मेरी तरफ़ से।

खैर, यह सब बताने का मूल मक़सद था ऐसे बेईमानों से और काले ठगों से आप सब को सचेत करना। बाकी भगवान का पक्ष भगवान खुद ही रख लेंगे मेरे और आप सब के सामने....

एक और मज़ेदार बात बता दूँ कि सरदार जी द्वारा दिया हुआ फोन नंबर आज भी नहीं लगता।

बोलो राधे राधे!



श्री पुरुषोत्तम कुमार श्रीवास्तव
स.ले.प.अ. एवं सचिव, प्र.नि.ले.प.

# वृंदावन की यात्रा
## और मेरा अनुभव

*सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।*
*अहं त्वं सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।। 66।।*

तात्पर्यः सभी धर्मों (अर्थात् कर्मकांड, साधन, और अहंकार-युक्त कर्तव्यों) का त्याग करके केवल मेरी शरण में आओ। मैं तुम्हें सभी पाप कर्मों से मुक्त कर दूंगा; भयभीत मत हो। – यह श्रीमद्भगवद्गीता के 18वें अध्याय (मोक्षसंन्यासयोग) का 66वाँ श्लोक है। इसे गीता का चरम श्लोक या सबसे महत्वपूर्ण संदेश माना जाता है।

भारत भूमि संतों, ऋषियों और दिव्य तीर्थस्थलों की भूमि रही है। इन सबमें ब्रजभूमि और विशेषकर वृंदावन का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है। वृंदावन केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है, बल्कि यह साक्षात प्रेम, भक्ति और शांति का केंद्र है। पिछले वर्ष मई 2025 महीने में मुझे अपने परिवार के साथ श्री कृष्ण और राधा रानी की पावन नगरी वृंदावन की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह यात्रा मेरे जीवन का सबसे अनोखा और आध्यात्मिक अनुभव बन गई, जिसका मुख्य कारण अपने आपको कृष्ण और राधा के प्रेम को महसूस करने, जीवन की नकारात्मकता को दूर करने और एवं पूज्य संत स्वामी प्रेमानंद जी महाराज के दर्शन और उनके विचार रहे।

वृंदावन की मेरी यात्रा ने मुझे यह अहसास दिलाया कि ईश्वर तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं और कोई भी मार्ग दूसरे से छोटा या बड़ा नहीं है। मुख्यतः ईश्वर तक पहुँचने के लिए आत्मा तीन मार्गों पर चलती हैः

- कर्म योगः निस्वार्थ कर्म का मार्ग।
- भक्ति योगः भक्ति का मार्ग।
- ज्ञान योगः आत्मज्ञान का मार्ग।

और इन रास्तों पर चलने का सार है समर्पण। अपने कर्मों, विचारों और विकल्पों को ईश्वर के प्रति समर्पित करना और बदले में किसी प्रकार की प्रशंसा, पुरस्कार या परिणाम की अपेक्षा न करना। प्रत्येक कर्म को इस स्पष्ट नीयत से करना कि यह ईश्वर से आपको जोड़ने का प्रयास है।

मुख्यतः दर्शनार्थी वृंदावन कृष्ण और राधा के प्रेम को महसूस और उनके दर्शन करने के लिए जाते है। मेरी अपनी आध्यात्मिक यात्रा में मैंने कृष्ण और राधा जी के हर प्रकार के भक्तों को देखा। कुछ राधा कृष्ण को पाने के लिए वृंदावन में आकर बस गए हैं, कुछ मंदिरों में उन्हें खोजने का प्रयास करते हैं, और कुछ मंदिरों से प्रसाद के रूप में मिलने वाली मालाओं और फूलों में राधा कृष्ण के दर्शन करने का प्रयास करते हैं। आपको यहाँ सड़कों पर सैकड़ों साधु 'हरे कृष्ण' का जाप करते हुए और कई तीर्थयात्री गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा दंडवत (पेट के बल) या नंगे पैर करते हुए घूमते हुए दिखाई देंगे। वृंदावन में मुख्यतः लोग एक दूसरे को राधे राधे कहकर ही संबोधित करना पसंद करते है।

सच कहूँ तो, राधा कृष्ण तक पहुँचने के लिए इतनी कठिनाइयों



का सामना कर रहे इन सभी भक्तों के सामने मैंने अपने आपको हीन महसूस किया क्यूंकि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया (पूजा और अर्चना को छोड़कर) जिससे मुझे लगे की मैं कान्हा और राधा जी के करीब हूँ। इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मैंने और मेरे परिवार ने वृंदावन के अनेक मंदिरों जिसे बाँके बिहारी जी, राधा वल्लभ, राधा रमण, प्रेम मंदिर के दर्शन किए और वहीं मुझे राधा कृष्ण में खोने से संबंधित अपने सभी प्रश्नों और असुरक्षाओं के उत्तर मिले।

कृष्ण ने मुझे जीवन और आध्यात्मिकता के मूल सिद्धांतों और निश्चित रूप से समर्पण को समझाने के लिए हमेशा ही असामान्य तरीकों का इस्तेमाल किया है और इस बार उनकी शिक्षा मुझे बहुत ही सूक्ष्म तरीके से प्राप्त हुई। मैंने इन मंदिरों में देखा की एक कृष्ण की स्तुति कर रहा है तो दूसरा मंदिर को साफ- सुथरा रखकर और तीर्थयात्रियों के सामान की सुरक्षा सुनिश्चित करके कृष्ण भक्तों की सेवा कर रहा है। इससे मुझे यह अहसास हुआ कि दो अलग-अलग लोग, जो दो बिल्कुल अलग रास्तों पर चल रहे हैं, मंदिर में पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ चुपचाप अपना काम कर रहे हैं और शायद इनकी यही तपस्या इनके मोक्ष के मार्ग में इन्हे अग्रसर कर रही है। एक कर्म योग के मार्ग पर चल रहा है और दूसरा भक्ति योग के मार्ग पर।

इनमें से कोई भी मार्ग छोटा नहीं है, और इसके साथ ही यह अहसास भी हुआ कि ईश्वर आपसे अपने प्रति समर्पण साबित करने के लिए बड़े-बड़े बलिदान या भारी-भरकम कार्य करने को नहीं कहता। वह चाहता है कि आप जो भी कर्म करे वो निस्वार्थ भाव से और प्रेम और भक्ति से करें।

आप क्या है, आप क्या करते हैं, यह सवाल मायने नहीं रखता, मायने यह रखता है कि किसी काम को करने के पीछे आपका इरादा या भावना क्या है और क्या आपका इरादा या भावना समर्पण की है और क्या आप जो कुछ भी कर रहे हैं उसमें कर्ता होने का भाव नहीं है। यह मुझे एक संदेश या मार्गदर्शन के रूप में मिला, जैसा कि मैं इसे कहना चाहूंगा, और मुझे ऐसा लगा जैसे कृष्ण मुझसे बात कर रहे हों।

कृष्ण ने कहा, "यदि तुम अपने परिवार, मित्रों और उपचार के लिए तुम्हारे पास आने वाले लोगों से उसी प्रकार प्रेम करते हो और उनकी देखभाल करते हो, जिस प्रकार तुम मुझसे प्रेम करते हो और मेरी देखभाल करते हो, यदि तुम हर उस व्यक्ति में मुझे देख सकते हो जिससे तुम मिलते हो, तो तुम्हारा जीवन मुझे अर्पित है। यदि तुम अपने माध्यम से होने वाले सभी उपचारों की जिम्मेदारी नहीं लेते हो, तो तुम 'निष्काम कर्म' कर रहे हो और लोगों की सेवा करके मेरी सेवा कर रहे हो। मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे प्रसन्न करने के लिए कोई अनुष्ठान या उपवास करो, मैं चाहता हूँ कि तुम मानवता की सेवा करो और यही मेरे लिए सबसे बड़ा अर्पण होगा और विश्वास मानो, मैं बहुत प्रसन्न होऊंगा।

मुझे जो भी शब्द मिले, उनसे मुझे यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई कि मेरा रास्ता मेरे सामने एकदम साफ है और साथ ही मुझे यह आश्वासन भी मिला कि मैं अपनी प्रगति और मोक्ष के लिए बनाए गए सही रास्ते का अनुसरण कर रहा हूं। मैं कहना चाहूंगा कि आप जो भी करते हैं, उसे बिना किसी शर्त के प्रेम से और बिना किसी अपेक्षा या कर्तापन की भावना के करें। यदि आपका कार्य ईश्वर के प्रति समर्पित है, तो यह समर्पण का कार्य है और निश्चिंत रहें कि आप सही रास्ते और सही दिशा पर चल रहे हैं।

इस यात्रा का एक दूसरा मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया पर अपने प्रवचनों से करोड़ों युवाओं की सोच बदलने वाले संत स्वामी प्रेमानंद जी महाराज के दर्शन करना भी था। महाराज जी के विचार, उनकी निश्छल मुस्कान और राधा रानी के प्रति उनका अनन्य प्रेम हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। हमें पता चला कि महाराज जी वृंदावन के परिक्रमा मार्ग पर स्थित श्री हित राधा केलि कुंज आश्रम में रहते हैं। उनके दर्शन के लिए भक्त रात से ही कतारों में लग जाते हैं।

अगली सुबह भोर के समय हम महाराज जी की पदयात्रा और दर्शन के लिए कुंज आश्रम के पास पहुंचे। भोर की ठंडी हवा और भक्तों के बीच गहरा सन्नाटा था। जैसे ही पूज्य महाराज जी राधा नाम का कीर्तन करते हुए अपने परिकर के साथ आगे बढ़े, पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। महाराज जी के चेहरे पर एक गजब का तेज और दिव्यता थी। दोनों गुर्दे (किडनी) खराब होने की गंभीर बीमारी के बावजूद उनके चेहरे पर दर्द का कोई नामोनिशान नहीं था; वहां केवल आत्मिक आनंद और मुस्कान थी। उन्हें साक्षात सामने देखना एक ऐसा भावुक क्षण था, जिसने मेरी आंखों में आंसू ला दिए। सत्संग के माध्यम से महाराज जी ने जो बातें सिखाईं, उन्होंने मेरे जीवन जीने के दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया। उनके उपदेशों की मुख्य बातें जैसे सच्चा सुख ईश्वर की शरण में है, कर्म ही प्रधान है और अपने माता-पिता की सेवा करना, ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाना और किसी का दिल न दुखाना ही सबसे बड़ी पूजा है। इसके साथ उन्होंने समझाया कि कठिन से कठिन समय में भी यदि राधे-राधे नाम का आश्रय लिया जाए, तो हर संकट दूर हो जाता है।

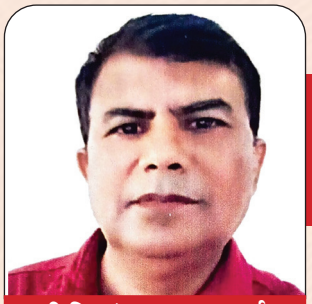
मेरी यह वृंदावन यात्रा केवल घूमने-फिरने तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने मेरे भीतर एक नई चेतना को जन्म दिया। मेरे अंदर जो भी नकारात्मकता और विषयों के प्रति आसक्ति थी वो इस वृंदावन की यात्रा के पश्चात सकारात्मकता और स्थिरता के रूप में परिणत हो गई।

वृंदावन की पावन गलियों का प्रभाव और स्वामी प्रेमानंद जी महाराज के दिव्य दर्शनों की स्मृति आज भी मेरे मानस पटल पर ताजा है। महाराज जी से मिली सीख ने मुझे सिखाया कि विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कुराते हुए भगवान पर भरोसा कैसे रखा जाता है। यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे अनमोल पूंजी बन चुकी है।

मैं अपने इस लेख से अन्य लोगों को भी यह अनुरोध करूंगा की आप भी एक बार वृंदावन जाइए और अपने जीवन में राधे राधे का उच्चारण करते हुए अपने जीवन के मार्ग को सकारात्मकता और पूर्ण ज्ञान से ओतप्रोत करे।

**हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।**
**हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।।**

■



श्री चितरंजन कुमार वर्मा,
सहायक पर्यवेक्षक

# माता-पिता

अदालत में पहली बार ऐसा मुकदमा आया... जहाँ एक बाप के तीन बेटे ज़मीन नहीं, अपने बूढ़े माँ-बाप को अपने साथ ले जाने की ज़िद कर रहे थे।" जिला न्यायालय का कमरा आम लोगों से खचाखच भरा हुआ था।

बाहर खड़े लोग एक-दूसरे से पूछ रहे थे—"किस बात का केस है?"

किसी ने जवाब दिया—

"सुना है तीनों बेटे आपस मे लड़ रहे हैं..."

एक आदमी हँसकर बोला—

"फिर वही ज़मीन-जायदाद का झगड़ा होगा।"

तभी कोर्ट का दरवाज़ा खुला।

अंदर जो दृश्य था, उसने सबकी सोच बदल दी।

कटघरे में कोई अपराधी नहीं खड़ा था।

वहाँ बैठे थे सत्तर वर्षीय राम मिश्रा और उनकी पत्नी सरथि देवी।

दोनों की आँखों में आँसू थे।

उनके सामने खड़े थे उनके तीनों बेटे—

विन, दीप और मेश।

जज ने फाइल खोली और मुस्कुराकर पूछा—

"तो बताइए... विवाद क्या है?"

सबसे बड़े बेटे विन ने हाथ जोड़कर कहा—

"माननीय न्यायालय... मैं अपने माता-पिता को अपने साथ रखना चाहता हूँ।"

जज ने दूसरे बेटे की ओर देखा।

दीप बोला—

"नहीं साहब... पिछले दस साल से बड़े भैया ने सबसे ज्यादा सेवा की है। अब मेरी बारी है। मैं उन्हें अपने घर ले जाना चाहता हूँ।"

तीसरा बेटा मेश रोते हुए बोला—

"दोनों भाई गलत हैं। माँ-बाबूजी मेरे साथ रहेंगे। मैं सबसे छोटा हूँ... मुझे उनका कर्ज़ उतारने दीजिए।"

पूरा अदालत कक्ष एकदम शांत हो गया।

ऐसा मुकदमा वहाँ किसी ने पहले कभी नहीं देखा था।

जज ने पूछा—

"अगर तीनों अपने माता-पिता को रखना चाहते हैं... तो अदालत क्यों आए?"

रामस्वरूप जी ने काँपती आवाज़ में कहा—

"हुजूर... यही तो हमारी परेशानी है।"

उन्होंने आगे कहना शुरू किया।

"हमने तीनों बेटों को ईमानदारी से पाला। खेत बेचकर पढ़ाया। खुद फटे कपड़े पहने, लेकिन बच्चों की फीस कभी नहीं रुकी।"

"आज हमारी उम्र हो गई है। हम चाहते थे कि किसी एक बेटे के पास रहें ताकि बाकी दो अपने परिवार पर ध्यान दें।"

"लेकिन..."

इतना कहते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई।

"तीनों बेटे हमें छोड़ने को तैयार ही नहीं हैं।"

जज ने सबसे बड़े बेटे से पूछा—

"तुम क्यों रखना चाहते हो?"

विन बोला—

"जब मैं छोटा था, मुझे बीमारी हो गया था। डॉक्टर ने उम्मीद छोड़ दी थी। बाबूजी मुझे रोज़ पाँच किलोमीटर गोद में उठाकर अस्पताल ले जाते थे। अगर उन्होंने हार मान ली होती... तो मैं आज बच नहीं पाता। अब उनकी चलने की ताकत चली गई है... तो क्या मैं उन्हें छोड़ दूँ?"

पूरे कमरे में सन्नाटा छा गया।

दूसरे बेटे दीप की बारी आई।

उसने जेब से एक पुराना रूमाल निकाला।

"यह माँ का है।"

"जब पढ़ाई की फीस भरने के पैसे नहीं थे, माँ ने अपने गहने बेचे थे। लेकिन मुझसे कहा था कि गहने चोरी हो गए हैं... ताकि मुझे अपराधबोध न हो।"

उसकी आवाज़ टूट गई।

"अब माँ मेरे घर नहीं रहेंगी... तो मेरी कमाई किस काम की?"

सबकी नज़र सबसे छोटे बेटे मेश पर गई।

वह कुछ देर चुप रहा।

फिर बोला—

"जब मेरा एक्सीडेंट हुआ था, डॉक्टर ने कहा था कि खून



तुरंत चाहिए। बाबूजी का ब्लड प्रेशर बहुत कम था... फिर भी उन्होंने अपना खून दिया। डॉक्टर ने मना किया था... लेकिन बाबूजी बोले थे—"

"अगर बेटे की साँस चलती रहे... तो मेरी कमजोरी कोई मायने नहीं रखती।"

मेश फूट-फूटकर रो पड़ा।

"आज वही बाबूजी बूढ़े हो गए हैं... तो मैं उन्हें किसी और के भरोसे कैसे छोड़ दूँ?"

अब अदालत में बैठे लोग भी आँसू पोंछ रहे थे।

जज ने सरथि देवी से पूछा—

"माँ... आप किस बेटे के साथ जाना चाहती हैं?"

सरथि देवी मुस्कुराईं।

"यही तो मुश्किल है साहब..."

"तीनों हमारे दिल के टुकड़े हैं।"

कुछ देर अदालत में खामोशी रही।

फिर जज ने कहा—

"आज फैसला कानून नहीं... संस्कार करेंगे।"

उन्होंने तीनों बेटों से पूछा—

"अगर मैं माता-पिता को वृद्धाश्रम भेज दूँ...?"

तीनों बेटे एक साथ चीख पड़े—

"नहीं... कभी नहीं!"

जज की आँखें भीग गईं।

उन्होंने फैसला सुनाया—

"यह अदालत आदेश नहीं देगी कि माता-पिता किस बेटे के साथ रहें।"

"लेकिन यह दर्ज करेगी कि इस शहर में एक ऐसा परिवार है जहाँ बेटे संपत्ति के लिए नहीं... अपने माँ-बाप की सेवा करने के अधिकार के लिए लड़ रहे हैं।"

फिर उन्होंने मुस्कुराकर कहा—

"राम जी और सरथि देवी जहाँ चाहें रहें... लेकिन हर रविवार तीनों बेटे, तीनों बहुएँ और सारे पोते-पोतियाँ एक ही छत के नीचे उनके साथ भोजन करेंगे।"

अदालत के बाहर मीडिया ने तीनों भाइयों से पूछा—

"आप लोग यह मामला आपस में भी सुलझा सकते थे।"

विनय ने जवाब दिया—

"हाँ... लेकिन हम चाहते थे कि दुनिया भी देखे..."

दीप ने बात पूरी की—

"कि माँ-बाप बोझ नहीं होते..."

मेश ने आँसू पोंछते हुए कहा—

"और जिस घर में माता-पिता के लिए झगड़ा हो... उस घर से बड़ा कोई तीर्थ नहीं होता।

"पहली बार अदालत में बेटों ने ज़मीन नहीं, माँ-बाप की सेवा का अधिकार माँगा।"

कहते हैं... उस खबर को पढ़ने के बाद शहर के कई वृद्धाश्रमों से कई बुज़ुर्ग अपने घर वापस ले जाए गए।

क्योंकि लोगों को समझ आ गया था—

माता-पिता की सबसे बड़ी विरासत उनकी ज़मीन नहीं... उनका साथ होता है।

और जिस दिन बच्चे उस साथ के लिए लड़ने लगें...

समझ लेना कि उस परिवार ने इंसानियत की सबसे बड़ी परीक्षा पास कर ली।

■



सुश्री आयुषी
बहन, सुश्री बिना कुमारी राय, क. अ. अ

# अकारण मिलन

अगर पुण्य की गठरी लेकर,
द्वार प्रभु के जाओगे,
तो सौदे की उस चौखट पर
क्या सचमुच उनसे मिल पाओगे?

यदि पूजा भी इस कारण हो कि
मुझको शिव मिल जाएँ
तो दीपक भी व्यापार हुआ,
वहाँ पुण्य भी एक मुद्रा बन जाए।

वो तो तब आकर बसते हैं,
जब मैं का घर खाली होता है।
जब पाने की हर चाह मिटे,
तब उनका साक्षात्कार होता है।

न पुण्य का अभिमान हो,
न पूजा का कोई हिसाब रहे।
न स्वर्ग की इच्छा शेष हो
न मुक्ति का कोई ख़्वाब रहे।

प्रेम जहाँ निष्कारण बहता हो,
वहीं शिव शक्ति का वास है।
जहाँ मैं पाऊँ मिट जाए,
वहीं शून्य का आभास है ▪



श्री हरिओम कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

# क्यूँ है

सुबह उगना ही है तो शाम को ढलता क्यूँ है,
किस से चाहत है बता, सूर्य तू जलता क्यूँ है,

क्या है ख्वाहिश तेरी, क्या दूर बहुत मंजिल है,
रोज तू इतनी सुबह घर से निकलता क्यूँ है,

दिल तू कब समझेगा वो हो नहीं सकता तेरा,
तू उसकी चाह में पल-पल यूँ पिघलता क्यूँ है,

सच से वाकिफ हूँ मैं, कोई और उसकी चाहत है,
स्वप्न झूठे तू दिखा, मुझको यूँ छलता क्यूँ है,

प्यार और दोस्त तो इंसान हैं मौसम तो नहीं,
आये दिन फिर यहाँ इंसान बदलता क्यूँ है,

रिश्ते-जज्बात वफ़ा-प्यार क्या सस्ते हैं बहुत,
पैसे पर लोगों का ईमान फिसलता क्यूँ है,

जो भी बेईमान है, झूठा है, भ्रस्ट, लोभी है,
फूल प्रगति का उनके घर पे ही खिलता क्यूँ है,

सब तो मशरूफ हैं जीवन की आपा-धापी में,
'ओम', बस एक तू रह-रह के मचलता क्यूँ है,

झूठ-अन्याय के अंधियारे में खुश हैं सारे,
सच की सम्मा तू जला राह पे चलता क्यूँ है ▪

# पंढरपुर की वारी



श्री शोकुल रतन खुविशो
डी.ई.ओ.



"इस साल तो वारी चलें ना?"

दादी की यह बात सुनकर अनिकेत मुस्कुरा दिया। पुणे की एक बड़ी आईटी कंपनी में काम करने वाला अनिकेत भगवान, भक्ति और वारी जैसी बातों में बिल्कुल विश्वास नहीं करता था। माँ-बाप के जाने के बाद तो उसका ईश्वर पर से भरोसा ही उठ गया था। उसे लगता था, "भगवान जैसी कोई चीज़ नहीं होती, यह सब मन का भ्रम है।" उसके लिए जीवन का मतलब था नौकरी, पैसा, मौज-मस्ती, सफलता और भागदौड़।

वह हँसते हुए बोला, "दादी, इतनी दूर पैदल क्यों चलना? भगवान के नाम पर इतना कष्ट उठाने की क्या ज़रूरत है?"

दादी मुस्कुराकर बोली, "बेटा, वारी सिर्फ़ पैदल चलना नहीं है, यह मन की यात्रा है।"

अनिकेत बोला, "अगर भगवान हर जगह है, तो घर बैठे भी मिल सकता है। फिर पंढरपुर ही क्यों जाना?"

दादी ने तुलसी की माला फेरते हुए कहा, "वारी में भक्ति, सेवा, प्रेम और समानता का संगम होता है। विठ्ठल का नाम लेते हुए उसके प्रेम में चलने का आनंद अनुभव करने से ही समझ आता है।"

कुछ वर्षों बाद दादी इस दुनिया से चली गईं। लेकिन उनकी यह बात अनिकेत के मन में हमेशा के लिए बस गई।

एक दिन दादी का कमरा साफ़ करते समय उसे उनकी तुलसी की माला, करताल और ज्ञानेश्वरी मिली। किताब के पहले पन्ने पर लिखा था—

"पंढरपुर की वारी केवल भगवान तक पहुँचने का रास्ता नहीं, बल्कि अपने आप तक लौटने का मार्ग है। यह सिर्फ़ यात्रा नहीं, बल्कि श्रद्धा, समानता, सेवा और आत्म-खोज का सुंदर सफ़र है।"

यह पढ़कर अनिकेत के मन में कुछ बदल गया। उसने उसी समय ऑफिस में पंद्रह दिन की छुट्टी का आवेदन भेज दिया।

उसने मन ही मन कहा, "इस साल मैं वारी ज़रूर जाऊँगा। यह दादी की भी इच्छा थी। एक बार अनुभव करके देखता हूँ।"

अगले दिन सफ़ेद कुर्ता-पायजामा और गांधी टोपी पहनकर वह आलंदी से निकलने वाली दिंडी में शामिल हो गया।

चारों ओर सफ़ेद कपड़ों में हज़ारों वारकरी थे। इतनी भीड़ होने के बावजूद सब अनुशासन से एक-दूसरे का ध्यान रखते हुए आगे बढ़ रहे थे। सबके होंठों पर एक ही नाम था—

"ज्ञानोबा-तुकाराम!"

पहले ही दिन अनिकेत ने देखा कि वहाँ अमीर-गरीब, किसान-अधिकारी, स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं था। हर कोई एक-दूसरे को प्रेम से "माऊली" कहकर बुला रहा था। कोई थके हुए यात्री को

पानी पिला रहा था, कोई उसके पैर दबा रहा था, तो कोई भोजन बाँट रहा था। किसी के चेहरे पर शिकायत नहीं थी।

एक शाम तेज़ बारिश शुरू हो गई। रास्ता कीचड़ से भर गया। फिर भी सभी वारकरी विठ्ठल का नाम लेते हुए आगे बढ़ते रहे।

कीचड़ में चलते-चलते अनिकेत परेशान हो गया। तभी उसके पास चल रहे सत्तर वर्षीय बापू मुस्कुराकर बोले—

"बेटा, जब पैरों पर कीचड़ लगता है, तब मन अपने आप साफ़ होने लगता है।"

यह सुनकर अनिकेत शांत हो गया। दिन बीतते गए। भजन, अभंग, करताल और मृदंग की धुन, भगवा ध्वज, धूल से सने पैर और सबके चेहरों पर सच्ची खुशी देखकर उसका मन बदलने लगा।

वह सोचने लगा, "दादी बिल्कुल सही कहती थीं। वारी को सिर्फ़ सुनकर नहीं, जीकर ही समझा जा सकता है।"

एक दिन एक बुज़ुर्ग वारकरी अचानक बेहोश होकर गिर पड़े। सभी लोग तुरंत उनकी मदद के लिए दौड़ पड़े। किसी ने पानी दिया, किसी ने दवा, किसी ने छाया की। किसी को उनका नाम भी नहीं पता था, फिर भी सब उन्हें अपना मानकर सेवा कर रहे थे।

यह देखकर अनिकेत की आँखें भर आईं। उसने सोचा—

"शायद निःस्वार्थ प्रेम यही होता है। मुझे लगता था कि दुनिया सिर्फ़ स्वार्थ से भरी है। लेकिन यहाँ बिना किसी रिश्ते के लोग एक-दूसरे के लिए अपना सब कुछ देने को तैयार हैं। सचमुच, इंसानियत आज भी ज़िंदा है।"

आख़िर वह दिन आ गया जब अनिकेत पंढरपुर पहुँच गया।

चंद्रभागा नदी के किनारे उसने पानी में अपना चेहरा देखा। उसे लगा, वह पहले वाला अनिकेत अब नहीं रहा। विठ्ठल मंदिर में दर्शन के समय उसने भगवान के सामने आँखें बंद कर लीं। उसने कुछ भी नहीं माँगा। बस मन ही मन कहा—

"हे प्रभु, धन तो बहुत मिला, लेकिन मन की असली समृद्धि आज मिली है।"

मंदिर से बाहर निकलते समय उसके गले में दादी की तुलसी की माला थी और उसके होंठों पर अपने आप भजन आ गया—

"वह ध्यान कितना सुंदर है, जिसमें प्रभु विठ्ठल ईंट पर खड़े दर्शन देते हैं।"

इस पंक्ति का भाव यह है कि भक्त के मन में विठ्ठल का ईंट पर खड़ा दिव्य स्वरूप इतना सुंदर और प्रिय है कि उसका ध्यान ही आनंद और भक्ति से भर देता है।

उसी क्षण उसे समझ में आया—

"वारी कभी समाप्त नहीं होती। पंढरपुर से लौटने के बाद असली वारी तब शुरू होती है, जब इंसान अपने मन में बसे विठ्ठल को हमेशा जीवित रखकर जीवन जीता है।" ■



श्री राकेश रौशन
लेखापरीक्षक

# खोखले नारों का सफर

ज्योत से ज्योत जलाते चलो,
पिछली वाली बुझाते चलो।
मूर्खता ऐसी दिखाते चलो,
चमचागिरी बिखराते चलो॥
वादों के महल बनाते चलो,
सवालों से नज़रें चुराते चलो।
आंकड़ों की बाज़ी खेलते चलो,
सच्चाई को यूँहीं दूर भगाते चलो॥
भाषण पर भाषण देते चलो,
मुद्दों को पीछे ढ़केलते चलो।
तस्वीरें खूब खिंचवाते चलो,
हालातों को पिछे छिपाते चलो॥
जनता को सपने दिखाते चलो,
हर कमी पर पर्दा डालते चलो।
अपनी वाहवाही गाते चलो,
आलोचना से कतराते चलो॥
बेटियों की बातें करते चलो,
उनकी सुरक्षा में सेंध लगाते चलो।
मंचों पर सम्मान जताते चलो,
सड़कों पर हाल भुलाते चलो॥
नारी शक्ति के गीत सुनाते चलो,
अवसर कम ही दिलाते चलो।
तस्वीरों में आगे बिठाते चलो,
फैसलों से दूर हटाते चलो॥
शिक्षा का दीपक बुझाते चलो,
बाधाओं को प्रतिदिन बढ़ाते चलो।
समानता के नारे लगाते चलो,
भेदभाव भी साथ-साथ निभाते चलो॥
सपनों को ऊँचा बताते चलो,
उड़ने को पंख कटाते चलो।
अधिकारों की चर्चा करते चलो,
मुश्किलें उनकी बढ़ाते चलो॥ ■

# सरकारी नौकरी



सुश्री शची प्रिया
पत्नी-श्री रोहित साह, क.अ.अ



आज उसने कह ही दिया जो उसे नहीं कहना चाहिए था। यही बात सोचते-सोचते निशा मन-ही-मन रोती रही। यह कहानी है एक छोटे शहर में रहने वाली निशा की। निशा एक सीधी, समझदार और सुलझी हुई लड़की है। जो बचपन से ही कुछ बनने के सपने देखती है। निशा पढ़ाई में बहुत अच्छी तो नहीं, पर काफी मेहनती है और अपने सपने को पूरा करने के लिए काफी मेहनत करती है।

निशा एक अच्छे परिवार से है जहाँ उसे कभी किसी चीज की कमी नहीं हुई। फिर भी उसे अपने अंदर एक खालीपन महसूस होता था। कहने को तो उसके पास सबकुछ था, पर फिर भी वो अकेली महसूस करती थी। वो अपने अंदर के अकेलेपन से लड़ते हुए अपने सपनेको पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करती है। पढ़ना उसका शौक बन गया था। उसे पढ़ाई के अलावे कुछ नहीं चाहिए था। पढ़ाई के प्रति उसकी रूचि इतनी बढ़ गई थी कि वो स्कूल टॉपर बन गई। फिर बड़े कॉलेज में पढ़ना उसका सपना था जो उसने अपने राज्य के सबसे बड़े कॉलेज से स्नात्तक की डिग्री ली। फिर उसने अपने सपने को पूरा करने के लिए जनरल कंपटीशन को चुना।

जनरल कंपटीशन, छात्र के लिए अच्छा और बुरा दोनों हो सकता है। यह व्यक्ति की मेहनत, मानसिक स्थिति और सही मार्गदर्शन पर निर्भर करता है। सही बदल सकता है, लेकिन अंधाधुंध तैयारी और असफलता का तनाव नुकसानदेह हो सकता है।

जनरल कंपटीशन के अच्छे पहलू यह है कि इससे जीवन में स्थिरता और सुरक्षा मिलती है। नियमित पढ़ाई करने की आदत बनती है। वही दूसरी ओर ज्यादा प्रतिस्पर्धा और बार-बार फेल होने से तनाव और डिप्रेशन हो सकता है। यदि कई सालों तक सफलता न मिले, तो उम्र और कीमती समय निकल जाता है। सीमित सीटें होने के कारण हर कोई सफल नहीं हो पाता है।

निशा भी इसी असफलता का शिकार हो गई। बार-बार असफल होने के कारण वह डिप्रेशन में चली गई। चार साल निरंतर प्रयास करने के बाद भी वो सफल न हो सकी। उसके बाद उसके घर वाले ने उसकी शादी करवाने की सोची।

निशा शादी के लिए अभी तैयार नहीं थी। वो शादी के नाम से ही चिढ़ जाती थी। शादी करना कभी उसके विशलिस्ट में था ही नहीं।

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। फिर एक ऐसा रिश्ता आया जिसने उसकी दुनिया ही बदल दी। उसके घरवालों को रिश्ता पसंद आया क्योंकि लड़का सरकारी नौकरी करता था। पर निशा अभी भी अपना ही धुन में थी। वो शादी से बचने के उपाय ढूंढ़ने लगी। फिर वो लड़का से मिलने गई ताकि वो उसे शादी न करने के लिए कनविंस कर सके। पर वो ऐसा कर न सकी। और अंततः उसकी शादी हो गई। निशा के पति ने इतना प्यार दिया कि वो धीरे-धीरे रिकवर होने लगी। उसे जिंदगी जीने का एक नया अवसर मिल गया। फिर वो अपने पति और घर के काम में इतनी उलझ गई कि वो अपने सपने को ही भूल गई। असफलता से वो इतनी टूट गई थी कि अब वो पढ़ाई के नाम से ही भागने लगी। उसमें इतनी भी हिम्मत नहीं बची कि वो अपनी तैयारी फिर शुरू कर सके।

तभी उसकी जिंदगी ने एक नया मोड़ लिया। एक दिन उसके पति ने मजाक में ही कह दिए कि "तुमने किया ही क्या है इतना पढ़ के। किस काम की है तुम्हारी डिग्री। डिग्री तो कोई भी ले सकता है। क्या फायदा तुम्हारा इदना पढ़ने का।" फिर क्या था? ये बात निशा को इतनी चुभी कि वो चुप-सी हो गई। इन बातों से मानो उसकी दुनिया ही हिल गई। ये बातें उसे अपने असफल होने से भी ज्यादा चुभने लगी।

आज वही हुआ जो नहीं होना चाहिए था। यही बातें वो रात-भर सोचती रही और रोती रही। शायद इसी का इंतजार कर रही थी वो शायद इसी टर्निंग प्वाइंट का इंतजार कर रही थी निशा। फिर क्या उसे अपनी पढ़ाई शुरू करने का मौका मिल गया। फिर उसने डिसाइड किया कि अब चाहे जो हो जाए वो अपना सपना पूरा करके रहेगी। अपनी पहचान बना के रहेगी। ताकि फिर कोई उसपे उंगली न उठा सके। घर के काम से जब भी उसे टाइम मिलता वो पढ़ लेती।

कुछ समय बाद वो घड़ी आ ही गई जिसका निशा इंतजार कर रही थी। सरकारी दफ्तर में वो अधिकारी बन गई। उसकी मेहनत का परिणाम उसे मिल गया। वो खुशी से झूम उठी। इसीलिए कहते है ईमानदारी से की गई मेहनत एक दिन जरूर रंग लाती है। ■

# छोटी-छोटी खुशियाँ



श्री शोकुल रतन खुविशो
डी.ई.ओ.

ज़िंदगी की असली खुशी बड़ी उपलब्धियों में ही नहीं, बल्कि छोटी-छोटी बातों में भी छिपी होती है। सुबह की ताज़ी हवा, किसी का मुस्कुराकर अभिवादन करना, परिवार के साथ बिताया गया समय, या किसी की मदद कर पाने का सुख—यही पल जीवन को सुंदर बनाते हैं।

कार्यालय में भी यदि हम एक-दूसरे का सम्मान करें, सहयोग की भावना रखें और सकारात्मक सोच के साथ काम करें, तो काम का माहौल और भी सुखद बन जाता है। एक छोटी-सी प्रशंसा, धन्यवाद या मुस्कान किसी का पूरा दिन बेहतर बना सकती है।

आइए, हम हर दिन छोटी-छोटी खुशियों को पहचानें, उनके लिए आभार व्यक्त करें और अपने आसपास सकारात्मकता फैलाएँ। क्योंकि खुश रहने का सबसे आसान तरीका है—जो हमारे पास है, उसकी कद्र करना और दूसरों के जीवन में भी खुशी बाँटना।

**सकारात्मक सोच – जीवन की सबसे बड़ी ताकत**

आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में चुनौतियाँ हर किसी के जीवन का हिस्सा हैं। हर दिन नई परिस्थितियाँ सामने आती हैं, लेकिन हमें आगे बढ़ाने वाली सबसे बड़ी शक्ति हमारी सकारात्मक सोच होती है।

सकारात्मक सोच का अर्थ यह नहीं कि जीवन में कठिनाइयाँ नहीं आएँगी। इसका अर्थ है कि हर परिस्थिति में सीखने, संभलने और आगे बढ़ने का साहस बनाए रखना। जब हम यह विश्वास रखते हैं कि जो भी होता है, वह हमें कुछ नया सिखाने और बेहतर बनाने के लिए होता है, तब हर अनुभव हमारे जीवन की पूँजी बन जाता है।

कार्यालय में भी सकारात्मक दृष्टिकोण का बहुत महत्व है। सहयोग, सम्मान, समय का मूल्य और एक-दूसरे की सराहना न केवल कार्यस्थल का वातावरण बेहतर बनाते हैं, बल्कि हमारी कार्यक्षमता भी बढ़ाते हैं। एक मधुर मुस्कान, एक धन्यवाद और एक उत्साहवर्धक शब्द किसी के दिन को बेहतर बना सकते हैं।

आइए, हम हर दिन आभार के साथ शुरू करें, अपने कार्य को पूरी ईमानदारी से करें और हर परिस्थिति में आशा का दीप जलाए रखें। क्योंकि सकारात्मक सोच केवल सफलता का मार्ग नहीं दिखाती, बल्कि जीवन को भी सुंदर और सार्थक बनाती है। ■



श्री विवेक सिंहल
व.ले.प.

# जो होता है, अच्छे के लिए होता है

जीवन एक यात्रा है, जिसमें सुख और दुख दोनों साथ चलते हैं। कई बार कुछ घटनाएँ हमें उस समय अच्छी नहीं लगतीं। हम निराश हो जाते हैं और सोचते हैं कि ऐसा हमारे साथ ही क्यों हुआ। लेकिन समय बीतने पर अक्सर समझ में आता है कि हर घटना अपने साथ कोई न कोई सीख लेकर आई थी।

"जो होता है, अच्छे के लिए होता है" केवल एक कहावत नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक सुंदर दृष्टिकोण है। जब हम हर परिस्थिति को स्वीकार करते हैं, तो हमारे भीतर धैर्य, विश्वास और आगे बढ़ने की शक्ति बढ़ती है। कठिनाइयाँ हमें मजबूत बनाती हैं और सफलता हमें विनम्र रहना सिखाती है।

कार्यालय हो या परिवार, यदि हम सकारात्मक सोच, ईमानदारी और सहयोग की भावना के साथ आगे बढ़ें, तो हर चुनौती आसान लगने लगती है। हर नया दिन हमें एक नया अवसर देता है—कुछ सीखने का, कुछ अच्छा करने का और किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने का।

आइए, जीवन के हर अनुभव को खुले मन से स्वीकार करें। विश्वास रखें कि हर कदम हमें एक बेहतर इंसान बनाने की दिशा में ले जा रहा है। सकारात्मक सोच, कर्म और आभार की भावना ही जीवन को वास्तव में सुंदर और सफल बनाती है।

■

# अरमानों के झूले



श्री राकेश रौशन
लेखापरीक्षक

## एक पिता की चाहत...

*अरमानों के झूलों पे मैं तुझे झुलाऊँगा,*
*छुपे हुए अरमाँ की लौ से तुझे पकाऊँगा।*
*अरमान था कि जहाँ झुला था वहीं तुझे झुला पाता,*
*जिस कंधे पर बैठ घुमा था वहीं तुझे बिठा पाता।*
*शेष सारे अरमानों को धीरे-धीरे समझाऊँगा,*
*अरमानों के झूलों पे मैं तुझे झुलाऊँगा।*

*सतरंगी जीवन के सातों रंग बिखेरा है तू,*
*खुशियों और सपनों का नया बसेरा है तू।*
*भूल गया था हँसना, हँसना तुझसे ही सीखूँगा,*
*बदले में अपना बचा जीवन तुझसा देख जीऊँगा।*
*अरमानों के झूलों पे.....*

*तेरे नन्हे हाथों में कल का उजियारा है,*
*मेरे हर अधूरे ख्वाबों का तू सहारा है।*
*तेरे संग हर सुबह एक नई उम्मीद जगाऊँगा,*
*अरमानों के झूलों पे.....*
*तेरी हँसी में मेरी सुबह, तेरी नींद में मेरी रात है,*
*तेरे बिना तो जैसे हर खुशी अधूरी बात है।*
*तेरी छोटी-छोटी खुशियों में मैं अपनी दुनिया बसाऊँगा,*
*अरमानों के झूलों पे.....*

*तू ही मेरा आज, तू ही मेरा कल है,*
*तेरे बिना अधूरा मेरा हर एक पल है।*
*तू बोले या न बोले, मैं सब जान जाऊँगा,*
*अरमानों के झूलों पे.....*

*तेरी आँखों में जो भी ख्वाब पलते हैं,*
*उन्हें हकीकत बनाने को साथ हम दोनों चलते हैं।*
*तेरी हर जीत पे गर्व से मुस्काऊँगा,*
*अरमानों के झूलों पे.....*

*तू ऊँचा उड़, ये आसमान भी छोटा लगे तुझे,*
*हर मंज़िल तेरे कदमों में झुकती लगे तुझे।*
*मेहनत और सच्चाई का रास्ता तुझे दिखाऊँगा,*
*अरमानों के झूलों पे..... ..*

■

# जीवन का गीत



सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

आना है तो जाना भी है
अंतिम गीत यही जीवन का एवम् प्रथम तराना भी है
उसके भेजे जग में आते
उसके हाथों से सजते हैं
उससे पाते साधन सारे
कृतज्ञतावश हम भजते हैं

जीवन का उद्देश्य यही है पाया फिर लौटाना भी है
रह जाते सब रिश्ते नाते
जब संदेशा आ जाता है
धन-बल-वैभव की गठरी को
लेकर कौन वहाँ जाता है?

नाम जिए कुछ और समय तो प्रेम का गीत सुनाना भी है
लालच में जो कैद हुए वे
हाथ पसारे ही जाते हैं
जीवनक्रम में छल-बल करके
उसमें दाग लगा जाते हैं

दागरहित जीवन की खातिर स्वच्छ पवन बिखराना भी है
ऋषियों, मुनियों, दार्शनिकों ने
जीवन जीना सिखलाया है
प्रेममार्ग के अनगिनत फूलों
से जगती को महकाया है

काँटों की दुनिया में सुन्दर पुष्पों को लगवाना भी है
साँसों की अपनी लय होती
उर का राग सुहाना होता
तान उठा लें शुभ्रगान तब
नहिं कोई भरमाना होता

एक ताल में सब को लाना और उन्हें गवाना भी है
आना है तो जाना भी है
अंतिम गीत यही जीवन का एवम् प्रथम तराना भी है ■

# हाउ आरव बीकेम ए सुपरहीरो



श्री वेद प्रकाश
सहायक पर्यवेक्षक

*यह कहानी वेद प्रकाश द्वारा लिखित पुस्तक "How Aarav Became a Superhero" से ली गयी है।*

इंदौर शहर के एक छोटे से पीले घर में 13 साल का आरव रहता था। वह बेहद शांत, विचारशील और सीधा लड़का था। उसकी माँ एक बेकरी में काम करती थीं, जिससे उसका घर हमेशा दालचीनी और मीठी खुशबू से महकता रहता था, और उसके पिता कंप्यूटर ठीक करते थे। आरव को गैजेट्स से ज़्यादा चित्रकारी का शौक था। उसके पास एक पुरानी स्केचबुक थी जिसे वह हमेशा अपने बैग में छिपाकर रखता था, जिसमें उसने बादलों के ड्रैगन और सपनों के तैरते शहर बनाए थे। आरव को सुपरहीरो बहुत पसंद थे। वो अलग प्रकार के सुपरहीरो अपने स्केचबुक में बनाकर उनके एक्शन की नक़ल किया करता था।

स्कूल में आरव को अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता था और रेहान नाम का क्लास का दादा (बुली) उसे परेशान करता था। एक दिन स्कूल के बाद भारी बारिश हो रही थी। आरव ने एक बेंच के नीचे भीगी और डरी हुई बिल्ली को देखा। बाकी बच्चे उसे देखकर चले गए, लेकिन आरव ने अपनी हूडि निकालकर उस बिल्ली को लपेट लिया और उसे तब तक संभाला जब तक वह शांत नहीं हो गई।

उसी रात, जब आरव ने अपने बिस्तर पर जाकर अपनी स्केचबुक का आखिरी खाली पन्ना खोला, तो वहाँ एक चमत्कार हुआ। उस पन्ने पर जादुई स्याही से कुछ शब्द चमकने लगे: *"सुपरहीरो बनने के लिए तुम्हें वहीं से शुरुआत करनी होगी जहाँ तुम हो। साधारण चीजों में ही असाधारण शक्तियाँ होती हैं। क्या तुम तैयार हो?"* आरव ने उन शब्दों को छुआ, पन्ना हल्का गर्म था और फिर वे शब्द गायब हो गए। आरव समझ गया कि यह उसकी कल्पना नहीं, बल्कि किसी बड़े रहस्य की शुरुआत थी।

**जादुई नक्शा और माजुली द्वीप से शुरुआत**

अगली सुबह आरव की स्केचबुक में भूरे रंग की स्याही से एक नया संदेश और भारत का एक जादुई नक्शा उभरा। उस नक्शे पर चार सुनहरे बिंदु चमक रहे थे: माजुली द्वीप, सतकोशिया गॉर्ज, लद्दाख, रणथंभौर और हम्पी। नक्शे के नीचे चमकदार शब्दों में लिखा था "हर स्थान पर एक परीक्षा होगी जिसमें सफल होने पर एक जादुई ओर्ब (Orb/गोला) का टुकड़ा मिलेगा, जिससे उसे असली सुपरहीरो की शक्तियां मिलेंगी।

आरव ने अपने माता-पिता से स्कूल प्रोजेक्ट का बहाना बनाया और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। उसका पहला पड़ाव था असम का माजुली द्वीप। ट्रेन, बस और फेरी का लंबा सफर तय करके जब वह वहाँ पहुँचा, तो नदी की हवाओं और बांस के जंगलों के बीच उसे एक मठ मिला। वहाँ उसकी मुलाकात 'नानू' नाम के एक रहस्यमयी लड़के से हुई, जिसके हाथों में रंग लगे थे और जो इस जादुई यात्रा में उसका मार्गदर्शक बनने वाला था।

नानू ने उसे बताया, "ओर्ब के टुकड़े उन भावनाओं से जुड़े हैं जो एक असली हीरो को परिभाषित करती हैं—साहस (Courage), नैतिकता (Morality), प्रेरणा (Inspiration) और बलिदान (Sacrifice)।" नानू ने यह भी कहा की वो आरव को इन परीक्षाओं में सफल होने में मदद करेगा। उसे बस परीक्षा के घडी पे नानू को याद करना होगा, और नानू हाज़िर हो जाएगा. और इसी के साथ आरव निकल पड़ा सुपर हीरो बनने की सफ़र पे जिसका पहला पड़ाव था Satkosia Gorge।

**पेज 3: सतकोशिया का साहस और लद्दाख की नैतिकता**

माजुली से आगे का रास्ता उसे ओडिशा के सतकोशिया गॉर्ज की ओर ले गया, जो महानदी पर स्थित था। यहाँ चारों तरफ घने जंगल और नदी के किनारे धूप सेकते लंबे मुंह वाले



घड़ियाल थे। नानू ने आरव को एक छोटी लकड़ी की नाव दी और कहा, "तुम्हें यह नदी अकेले पार करनी होगी। सामने की गुफा में साहस का टुकड़ा है।"

आरव अकेले नाव चलाकर आगे बढ़ा। घड़ियालों को देखकर उसका दिल दहल रहा था, लेकिन वह पीछे नहीं हटा। नदी पार करने के बाद उसे जंगल से एक जानवर के रोने की आवाज़ आई। उसने देखा कि एक घड़ियाल ने एक हिरण (Gazelle) का पैर पकड़ रखा था। आरव ने डर को पीछे छोड़ते हुए एक बड़ा सा डंडा उठाया और घड़ियाल के मुँह पर वार किया, जिससे घड़ियाल ने हिरण को छोड़ दिया और हिरन वह से भाग गया.। इस बहादुरी के बाद वह गुफा में गया, जहाँ उसने अपने डर के सायों को हराकर 'साहस' का सुनहरा ओर्ब टुकड़ा हासिल किया।

इसके बाद आरव की यात्रा लद्दाख की बर्फीली वादियों में पहुँची। वहाँ की गहरी खामोशी और ऊंचे पहाड़ इंसान को खुद के भीतर झांकने पर मजबूर करते थे। नानू ने उसे 'सांगपात्र' (द लिसनिंग रॉक) नाम के एक चपटे पत्थर पर जाकर बैठने को कहा। वहाँ घंटों अकेले बैठकर आरव ने आत्म-चिंतन किया। उसने अपनी उन गलतियों को याद किया जब उसने डर या घमंड में आकर दूसरों का साथ नहीं दिया था। उसे समझ आया कि असली नैतिकता (Morality) वह चुनाव है जो हम तब करते हैं जब हमें कोई नहीं देख रहा होता। इस सत्य को स्वीकार करते ही उसे ओर्ब का दूसरा पारदर्शी टुकड़ा मिल गया।

**रणथंभौर की प्रेरणा और हम्पी का सर्वोच्च बलिदान**

आरव का अगला पड़ाव राजस्थान का रणथंभौर का जंगल था। वहाँ नानू ने उसे कुछ ग्रामीण बच्चों से मिलवाया जो यह मानते थे कि गरीब बच्चों के लिए सपने देखना बेकार है। आरव ने अपनी स्केचबुक के माध्यम से उन्हें सतकोशिया और लद्दाख की अपनी कहानियां सुनाईं और उन्हें प्रेरित किया कि वे भी हार न मानें। तभी पास के गाँव में एक गैस सिलेंडर फटने से आग लग गई। आरव बिना सोचे कुएं से पानी की बाल्टियाँ भर-भर कर आग बुझाने में जुट गया। उसे देखकर बाकी ग्रामीण और बच्चे भी आगे आए और आग पर काबू पा लिया गया। गाँव के मुखिया ने आरव की इस प्रेरणादायक बहादुरी के लिए उसे ओर्ब का तीसरा 'प्रेरणा' (Inspiration) का जलता हुआ टुकड़ा सौंप दिया।

अंतिम परीक्षा कर्नाटक के ऐतिहासिक शहर हम्पी के खंडहरों में थी। हम्पी की टूटी हुई इमारतें और मंदिर त्याग की गवाही दे रहे थे। नानू उसे एक चबूतरे पर ले गया जहाँ लिखा था कि अंतिम टुकड़े के लिए उसे अपनी सबसे कीमती चीज़ का बलिदान करना होगा। आरव सोच ही रहा था कि तभी उसे एक ७ साल की छोटी बच्ची (अंजलि) रोती हुई मिली। आरव ने उसे चुप कराने की कोशिश की। बच्ची की नज़र आरव की पोटली में चमकते ओर्ब के टुकड़ों पर पड़ी और उसने वे टुकड़े माँगे।

आरव असमंजस में था। ये टुकड़े उसकी पूरी यात्रा और सुपरहीरो बनने के सपने की कमाई थे। लेकिन उस बच्ची को रोता हुआ न देख पाने के कारण, आरव ने रोती हुई बच्ची की खुशी के लिए अपने उन कीमती ओर्ब टुकड़ों को उसे सौंप दिया। यह उसका सर्वोच्च 'बलिदान' (Sacrifice) था। तभी एक चमत्कार हुआ—वह बच्ची गायब हो गई और चारों टुकड़े हवा में तैरते हुए आपस में जुड़कर एक जादुई चमकदार ओर्ब बन गए। आरव के सीने में एक गहरी शांति और असीम ऊर्जा समा गई।

**सपने से परे—सच्चा सुपरहीरो**

अचानक एक झटके के साथ आरव की आँख खुली। घड़ी में रात के * बज रहे थे। उसने घबराकर अपने हाथ देखे, कमरे को देखा और अपनी स्केचबुक जांची—वहाँ कोई जादुई नक्शा नहीं था। वह अपने बिस्तर पर बैठ गया और उसे एहसास हुआ कि यह सब एक बेहद गहरा और सजीव सपना था। उसके पास कोई उड़ने की शक्ति या जादुई ओर्ब नहीं था। लेकिन जब उसने दीवार पर टंगे सुपरहीरो के पोस्टर को देखा, तो उसे एक नई समझ मिली। सपना भले ही काल्पनिक था, लेकिन उस यात्रा ने उसके भीतर के डर और संकोच को हमेशा के लिए मिटा दिया था। उसका असली पावर जाग चुका था—दूसरों की मदद करने और खुद पर विश्वास रखने का पावर।

अगले दिन जब वह स्कूल गया, तो उसका आत्मविश्वास बदला हुआ था। क्लास के बुली रेहान ने जब एक छोटे बच्चे को परेशान करने की कोशिश की, तो आरव बिना डरे शांति से उसके सामने खड़ा हो गया। आरव की आँखों में वह फौलादी दृढ़ता देखकर रेहान बिना कुछ बोले पीछे हट गया।

आरव समझ गया था कि सुपरहीरो बनने के लिए किसी चमकीले चोगे (Cape) या उड़ने की शक्ति की ज़रूरत नहीं होती। असली सुपरहीरो वह है जो सही समय पर अन्याय के खिलाफ खड़ा हो, जो दूसरों के दुख को सुने, जो invisible (अदृश्य) होकर भी लोगों की मदद करे और दुनिया में दयालुता फैलाए। आरव अब अपनी ज़िंदगी के हर दिन को एक सच्चे सुपरहीरो की तरह जीने के लिए पूरी तरह तैयार था। ■





**कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की कुछ झलकियाँ**

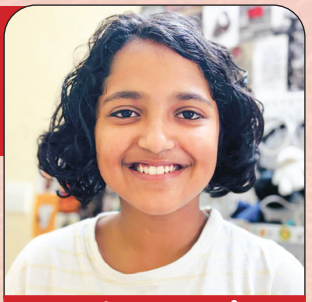


# कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की कुछ झलकियाँ





# दी एनिमल व्हीस्परर



सुश्री अहाना शर्मा
भतीजी, श्री. वेद प्रकाश, सहायक पर्यवेक्षक

प्रिया शर्मा सुबह जल्दी उठने वाली लड़की नहीं थी। हर दिन उसकी माँ को चिल्लाना पड़ता था: "प्रिया! प्रिया! बस तुम्हारे बिना चली जाएगी!", और हर दिन, प्रिया कराहती थी और अपने कंबल को अपने सिर के ऊपर खींच लेती थी।

लेकिन एक मंगलवार की सुबह, उसकी बिल्ली बिस्कुट (Biscuit) ने उसके चेहरे पर छलांग लगा दी।

"बिस्कुट!" वह थूकते हुए बुदबुदाई।

"आखिरकार," बिस्कुट ने कहा। "मैं बीस मिनट से इंतज़ार कर रहा हूँ। मेरा कटोरा खाली है। यह एक संकट है।"

प्रिया इतनी तेजी से उठकर बैठी कि वह लगभग बिस्तर से गिर ही गई। उसने बिल्ली को घूरकर देखा। बिल्ली ने उसे घूरकर देखा।

"...क्या तुमने अभी-अभी बात की?" उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

"बेशक मैंने बात की," बिस्कुट ने बहुत ऊबते हुए लहजे में कहा। "असली सवाल यह है कि तुम मुझे सुन क्यों सकती हो। अब। खाना। कृपया।"

प्रिया ने अपना मुँह खोला। बंद किया। फिर से खोला। वह एक बहुत ही उलझन में पड़ी गोल्डफिश मछली जैसी लग रही थी।

वह रसोई में गई और बिस्कुट का कटोरा भर दिया। उसने इसे बड़े उत्साह और शून्य कृतज्ञता के साथ खाया।

"धन्यवाद," उसने कौर चबाने के बीच में कहा। "वैसे तुम्हारे बाल बहुत खराब लग रहे हैं।"

**अध्याय-2. बस की यात्रा: एक आपदा**

स्कूल बस में, प्रिया ने खुद से दृढ़ता से कहा: मैंने यह सब सिर्फ कल्पना की थी। बिल्लियाँ बात नहीं कर सकतीं। यह सब एक सपना था।

तभी बाहर टेलीफोन के तार पर बैठे कबूतर ने कहा, "अच्छा बैकपैक (बस्ता) है।"

प्रिया बिल्कुल जम गई।

"क्या तुम्हारे पास कोई चिप्स हैं?"

"नहीं," प्रिया ने चुपके से कहा।

उसके सहपाठी रोहन ने उसकी ओर देखा। "क्या तुमने कुछ कहा?"

"कुछ नहीं," प्रिया ने कहा। "बिल्कुल कुछ नहीं।"

तभी एक गौरैया फुदक कर उसके आगे वाली सीट पर आ गई और बोली, "तुम हमें सुन सकती हो, है ना? ओह, कितना रोमांचक है! एक इंसान जो हमें सुन सकता है। तुम्हें बताने के लिए बहुत कुछ है, तुम्हारे स्कूल के पास वाले पार्क में बेहतरीन केंचुए हैं।"



"मुझे केंचुओं की कोई परवाह नहीं है!" प्रिया गुस्से में फुसफुसाई।

रोहन ने उसे घूरकर देखा, "क्या तुम ठीक हो?"

"ठीक हूँ," प्रिया ने ऐसा मुस्कुराते हुए कहा जिससे उसका चेहरा दर्द करने लगा, "बिलकुल ठीक हूँ।"

जिस समय वह बस से उतरी, वह केंचुओं के बारे में उससे कहीं अधिक जान चुकी थी जितना वह अपनी पूरी जिंदगी में कभी जानना चाहती थी।

**अध्याय-3. कौवों के साथ दोपहर का भोजन**

लंच का समय। प्रिया शांति से खाने के लिए नीम के पेड़ के नीचे बैठ गई। उसके ऊपर की शाखाओं पर तीन कौवे आकर बैठ गए। "हैलो," पहले कौवे ने कहा। "कृपया," प्रिया ने कहा, "अभी नहीं।"

"हमने सुना है कि कोई ऐसा इंसान है जो जानवरों से बात कर सकता है," दूसरे कौवे ने कहा।

"सबको पहले से ही कैसे पता चल गया?" प्रिया ने ऊपर देखा।

"गौरैया ने कबूतर को बताया, कबूतर...

...ने हमें बताया। कबूतर राज़ छुपाने में बहुत बुरे होते हैं।"

"हमारे पास एक प्रस्ताव है," तीसरे कौवे ने कहा। "मैदान की देखभाल करने वाला (ग्राउंडकीपर) हमारे कूड़ेदानों को हटाता रहता है। हमारा एक बहुत ही जटिल सिस्टम है। क्या आप कृपया उससे रुकने के लिए कह सकती हैं?"

प्रिया ने अपने सैंडविच को देखा। उसने कौवों को देखा। उसने सोचा कि कैसे, तीन दिन पहले तक, उसकी सबसे बड़ी समस्या गणित की परीक्षा थी।

"मैं ग्राउंडकीपर से नहीं कहने जा रही... ...कि वह डिब्बे हटाए क्योंकि इससे कौवे परेशान होते हैं।"

कौवे बड़बड़ाते हुए उड़ गए।

तभी एक कुत्ता दौड़ता हुआ आया। "हैलो! तुम जानवरों से बात करने वाली हो! क्या मैं तुम्हें अपनी गेंद के बारे में बता सकता हूँ? मेरे पास एक गेंद है। वह पीली है!"

प्रिया ने फैसला किया कि अब बाहर बैठकर लंच करने का विकल्प सही नहीं था।

**अध्याय-4. अब तक का सबसे बुरा दिन**

अगली सुबह की शुरुआत खराब और बदतर रही। गणित की क्लास में, एक बिल्ली खुली खिड़की से अंदर आ गई और सीधे प्रिया के डेस्क पर बैठ गई।

"मुझे सलाह चाहिए," बिल्ली ने घोषणा की। "मेरी गली में एक कुत्ता है जो मुझे घूरता रहता है। यह बहुत असभ्य है। मुझे क्या करना चाहिए?"

"अभी नहीं," प्रिया ने भींचे हुए दांतों से फुसफुसाया।

"प्रिया!" उसकी गणित की शिक्षिका, मिसेज नायर ने कहा। "क्या तुम मेरी क्लास के दौरान बात कर रही हो?"

"नहीं मैम।"

"तो फिर तुम्हारी डेस्क पर बिल्ली क्यों है?"

प्रिया ने बिल्ली की तरफ देखा। बिल्ली ने मिसेज नायर की तरफ बड़े तिरस्कार से देखा।

"इसमें से चाक (chalk) जैसी गंध आ रही है," बिल्ली ने प्रिया से कहा।

"बाहर जाओ!" मिसेज नायर ने कहा, - उम्मीद है कि, बिल्ली से,

...हालांकि, उनकी आँखें प्रिया पर भी थीं।

प्रिया ने बिल्ली को उठाया और खिड़की से बाहर छोड़ दिया। बिल्ली पूरे समय शिकायत करती रही।

**अध्याय-5. रहस्य लगभग बाहर आ ही गया**

वह रोहन ही था जिसने लगभग सब कुछ बर्बाद कर दिया था।

सोमवार को, वह बस में प्रिया के बगल में बैठा और बोला, "मैं तुम्हें देख रहा हूँ।"

प्रिया बिल्कुल ठंडी पड़ गई। "क्या?"

"तुम जानवरों से बात करती हो," उसने कहा। "मैंने तुम्हें देखा है। लंच के समय वह कौवा। बस स्टॉप पर वह कबूतर। गणित की क्लास में वह बिल्ली।" उसने अपने हाथ मोड़ लिए (हाथ बांध लिए)।

"तुम वास्तव में उन्हें समझती हो, है ना?"

प्रिया का मुँह सूख गया। उसका दिल इतनी तेजी से धड़क रहा था कि उसे पूरा यकीन था कि रोहन उसे सुन सकता है।

"यह बकवास है," उसने कहा।

"ऐसा है क्या? क्योंकि कल तुमने गेट के पास वाले कौवे से कहा था कि 'इतने नाटकीय मत बनो' और फिर वह तुरंत उड़ गया। और पिछले हफ्ते तुमने पाँच मिनट उस आवारा कुत्ते के पास उकडू बैठकर बिताए और फिर सीधे मिसेज अय्यर के पास चली गईं।"

प्रिया ने कुछ नहीं कहा।

"मैं किसी को नहीं बताने जा रहा हूँ," रोहन ने शांति से कहा। "मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि क्या यह सच है।"

प्रिया ने उसकी ओर देखा।

रोहन चार साल से उसका सहपाठी था। वह उसके साथ कभी भी बुरा नहीं रहा था। उसने दो बार उसे अपना ज्योमेट्री बॉक्स भी उधार दिया था।

उसने एक गहरी सांस ली।

"अगर मैं तुम्हें बताऊँ," उसने सावधानी से कहा, "तो तुम्हें लगेगा कि मैं मनगढ़ंत बातें कर रही हूँ।"



"कोशिश करके देखो (मुझ पर भरोसा करो)," रोहन ने कहा।

इसलिए, बहुत शांति से, स्कूल बस में अपने आस-पास इंजन की गड़गड़ाहट के बीच, प्रिया ने उसे सब कुछ बता दिया।

रोहन ने एक बार भी टोके बिना पूरी बात सुनी। जब वह अपनी बात खत्म कर चुकी, तो वह कुछ देर के लिए शांत रहा।

"ठीक है," उसने आखिरकार कहा।

"ठीक है?" प्रिया ने कहा। "तुम बस इतना ही कहने वाले हो?"

"क्या तुम कौवे से कह सकती हो कि वह मेरे सिर पर चीजें गिराना बंद कर दे?"

**अध्याय-6. बिस्कुट का रहस्य**

उस शाम, प्रिया ने बिस्कुट के साथ एक गंभीर बातचीत की।

"मैं अचानक जानवरों की आवाज़ कैसे सुन सकती हूँ?" उसने पूछा।

बिस्कुट ने अपने पंजे को साफ करना बंद कर दिया - जो वह केवल बहुत महत्वपूर्ण क्षणों में ही करता था।

"बहुत लंबा समय हो गया है जब कोई इंसान ऐसा कर सकता था," उसने कहा। "ऐसा करने वाली आखिरी इंसान तुम्हारी परदादी थीं।"

प्रिया बिल्कुल स्थिर हो गई। "नानी मीरा?"

"वह मुझे एक अलग नाम से बुलाती थीं," बिस्कुट ने इस अंदाज़ में कहा जिससे लगा कि यह विषय अब बंद हो चुका है।

प्रिया ने उसे घूरकर देखा, "तुम बहुत बूढ़े हो, है ना?"

"यह बेहद असभ्य बात है," बिस्कुट ने कहा, और फिर से अपना पंजा साफ करने लगा।

प्रिया ने नानी मीरा की उस एक तस्वीर के बारे में सोचा - एक छोटी, गंभीर महिला जिनकी आँखें चमकदार थीं और उनकी गोद में एक बिल्ली बैठी थी।

एक बिल्ली जो, अब जब प्रिया ने इसके बारे में सोचा, तो वह आश्चर्यजनक रूप से जानी-पहचानी लग रही थी।

"बिस्कुट," उसने कहा। "क्या तुम जादुई हो?"

एक बहुत लंबा ठहराव.....

"सभी बिल्लियाँ होती हैं," बिस्कुट ने कहा। "बस इंसान आमतौर पर समझ नहीं पाते हैं।"

उसे याद आया कि उसके पिता ने बाज़ार में क्या कहा था: तुम्हारी नानी मीरा कहा करती थीं कि जानवर हमेशा...

...बात करने के लिए सही लोगों को ढूंढ ही लेते हैं।

शायद यह उपहार कोई इत्तेफाक नहीं था। शायद यह शुरू से ही उसी का इंतज़ार कर रहा था।

प्रिया ने अपनी हरी नोटबुक निकाली और लिखा: चीजें जो मैंने अब तक जानवरों से सीखी हैं।

गौरैयों को पता होता है कि सबसे अच्छे केंचुए कहाँ मिलते हैं। कौवों के पास एक डिब्बा (bin) सिस्टम होता है। कुत्ते गेंदों को लेकर बहुत उत्साही होते हैं। बिल्लियाँ संभवतः जादुई होती हैं।

फिर सबसे नीचे उसने लिखा: जानवरों से बात करने में सक्षम होना सबसे अजीब, सबसे थका देने वाली और सबसे अद्भुत चीज़ है जो मेरे साथ कभी हुई है!

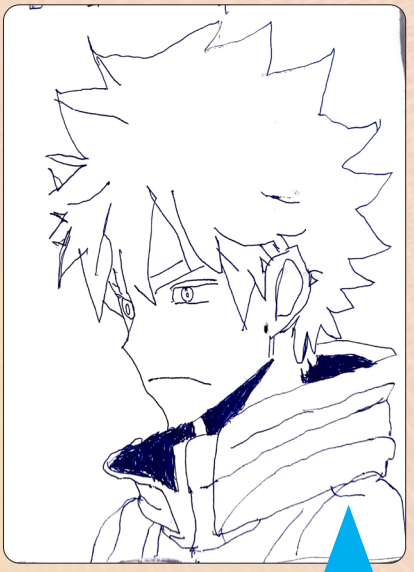
मुझे लगता है कि मैं इस शक्ति को अपने पास ही रखूँगी।

## सेवानिवृत्ति

| क्र.सं | नाम | पदनाम | सेवानिवृत्ति की तिथि |
|---|---|---|---|
| 1 | श्रीमती अंकिता एन. लिम्बाचिया | व.ले.प.अ. | 30/04/2026 |
| 2 | श्री दिनकर ज्योतिराम घाडगे | व.ले.प.अ. | 31/05/2026 |
| 3 | श्री धनंजय जी. राणे | सहायक पर्यवेक्षक | 30/06/2026 |
| 4 | श्री संजय पी. कदम | सहायक पर्यवेक्षक | 30/06/2026 |
| 5 | श्री मधुकर आर. तर्जुले | व.ले.प.अ. | 30/06/2026 |
| 6 | श्रीमती सुनीता भोजवानी | स.ले.प.अ. | 31/07/2026 |
| 7 | श्री जयकुमार भास्करन | स.ले.प.अ. | 31/07/2026 |
| 8 | श्री मनोज एस. कोली | बहु-कार्य कर्मी | 31/07/2026 |
| 9 | श्री उमेश आर. पाटिल | व.ले.प.अ. | 31/08/2026 |







देवांश यादव,
सुपुत्र बरनाली यादव,
स.ले.प.अ.





आराध्या पांडेय,
सुपुत्री श्री मानवेन्द्र पांडेय
स.ले.प.अ.



श्री रोहित साह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

# क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, 2025 : जयपुर

## राजस्थान का दौरा: एक अविस्मरणीय अनुभव

राजस्थान की यह मेरी पहली यात्रा थी, जो मेरे लिए अत्यंत स्मरणीय और सुखद बन गई। यह अवसर 17 फरवरी 2025 को जयपुर प्रदर्शनी एवं सम्मेलन केंद्र (JECC), सीतापुरा, सांगनेर, जयपुर में आयोजित 'मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन' के कारण मिला। (विदित हो कि पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों हेतु पृथक सम्मेलन असम में आयोजित होना निर्धारित था।)

उन दिनों मैं 'केंद्रीय अनुवाद प्रशिक्षण संस्थान', मुंबई के बेलापुर (नवी मुंबई) केंद्र में प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था। इसी दौरान मेरे कार्यालय के सहयोगियों ने दूरभाष के माध्यम से मुझे जयपुर सम्मेलन में सम्मिलित होने का प्रस्ताव दिया। चूंकि मेरी प्रशिक्षण अवधि 14 फरवरी को समाप्त हो रही थी, अतः मैंने सहर्ष सहमति दे दी। 10 फरवरी को ज्ञात हुआ कि राजभाषा विभाग के पोर्टल पर मेरा पंजीकरण नहीं हो पाया था, जिस पर मैंने अपने मित्र से पंजीकरण कराने का अनुरोध किया। शीघ्र ही पंजीकरण संख्या मेरे मोबाइल एवं ईमेल पर प्राप्त हो गई। इसके पश्चात मैंने मुंबई से जयपुर आने-जाने हेतु हवाई टिकट बुक कर लिया।

16 फरवरी की रात्रि छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (टर्मिनल-1) से मैंने जयपुर के लिए उड़ान भरी। 17 फरवरी की प्रातः लगभग 7 बजे जयपुर पहुँचकर होटल में चेक-इन किया। तत्पश्चात नित्यक्रिया और नाश्ते से निवृत्त होकर शहर भ्रमण की योजना बनाई। जयपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को निकट से देखने के लिए हमने एक ऑटो-रिक्शा बुक किया।

### गुलाबी नगरी का भ्रमण एवं दर्शनीय स्थल

**हवामहल:** सबसे पहले हम जयपुर की पहचान माने जाने वाले 'हवामहल' पहुँचे। वहाँ हमने विस्तार से घूमकर इस अद्भुत स्थापत्य कला का आनंद लिया और कुछ स्मरणीय तस्वीरें भी खिंचीं।





**आमेर का किला:** हवामहल के उपरांत हमारी अगली मंज़िल 'आमेर का किला' थी। हमारा ऑटो चालक अपनी ही धुन में मस्त था; हम कुछ पूछते तो वह मौन ही रहता, मानो बोलने का नियम ले रखा हो! लगभग डेढ़ घंटे की यात्रा के बाद हम आमेर किला पहुँचे। धूप तेज थी, इसलिए हमने टोपी और धूप का चश्मा खरीदा। किले के ऊपर जाने के लिए यद्यपि पैदल मार्ग और हाथियों की सुविधा उपलब्ध थी, परंतु समय की बचत हेतु हमने थार (4x4) जीप का विकल्प चुना।



**किले का अनुभव:** हमने किले के विभिन्न भागों जैसे दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास और ऐतिहासिक 'केसर बाग' का अवलोकन किया। मान्यता है कि आमेर के राजा ने कश्मीर से केसर लाकर

यहाँ रोपने का प्रयास किया था, परंतु जलवायु अनुकूल न होने के कारण सफलता नहीं मिली। चारों ओर पहाड़ियों से घिरा यह किला सुरक्षा और स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत सुदृढ़ है।



**नाहरगढ़ किला:** आमेर किला भ्रमण के उपरांत हमने 'नाहरगढ़ किले' का रुख किया, जहाँ वैक्स म्यूजियम (मोम के पुतले) निर्मित हैं। नाहरगढ़ की छत से जब हमने जयपुर शहर का विहंगम (हवाई) दृश्य देखा, तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो पूरा जयपुर किसी विशाल पहाड़ी की गोद में मुस्कुरा रहा हो।



**जलमहल:** ढलती शाम के साथ हम जलमहल देखने पहुँचे। जलमहल के समक्ष रुककर तस्वीरें खिंचवाईं। ढलते सूर्य की रोशनी में जलमहल का दृश्य मनमोहक लग रहा था।

दिनभर के भ्रमण के बाद हमें तीव्र भूख का अनुभव हो रहा था। मार्ग में देहाती/पारंपरिक परिवेश वाला एक ढाबा-होटल मिला, जहाँ खाट पर बैठकर भोजन की व्यवस्था थी और पृष्ठभूमि में मधुर संगीत की ध्वनि गूँज रही थी। वातावरण किसी देवालय जैसा शांत और पावन प्रतीत हो रहा था। यद्यपि कुछ कारणों से हम वहाँ भोजन न कर सके और अंततः अपने होटल पहुँचकर ही रात्रिभोज किया।

**क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन**

अगली सुबह क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लेने हेतु हम ऑटो से JECC, सांगनेर पहुँचे। वहाँ देशभर से आए राजभाषा प्रेमियों का उत्साह देखते ही बनता था, जिनमें से कई पुराने परिचित भी मिले।

अल्पाहार के पश्चात कार्यक्रम के शुभारंभ की प्रतीक्षा थी। मुख्य अतिथि के रूप में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का आगमन अपेक्षित था, परंतु अपरिहार्य कारणों से वे उपस्थित न हो सके। तत्पश्चात, कार्यक्रम का आधिकारिक उद्घाटन राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा जी एवं अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ संपन्न हुआ। राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। स्थानीय कलाकारों द्वारा राजस्थान के पारंपरिक लोकनृत्यों की शानदार प्रस्तुति दी गई। संपूर्ण सत्र अत्यंत संवादात्मक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी रहा। सम्मेलन के समापन के पश्चात हमने राजस्थान के सुप्रसिद्ध व्यंजनों—दाल-बाटी-चुरमा एवं दाल पकवान का रसास्वादन किया। पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा धारण कर फोटो खिंचाना भी एक अलग ही गर्व और आनंद का अनुभव था। अगले दिन हमारी मुंबई वापसी की फ्लाइट थी। पर्याप्त समय उपलब्ध होने के कारण हमने दोपहर में एक चलचित्र (सिनेमा) का आनंद लिया और फिर हवाई अड्डे की ओर पैदल ही प्रस्थान किया।

हवाई अड्डे के समीप ही प्रसिद्ध 'पत्रिका गेट' स्थित है। राजस्थान पत्रिका मीडिया समूह द्वारा स्थापित यह द्वार जयपुर के नौवें दरवाजे के रूप में जाना जाता है, जो राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का सुंदर प्रतीक है।

इस प्रकार, यह यात्रा न केवल राजभाषा के दृष्टिकोण से अत्यंत सार्थक और उपयोगी रही, बल्कि राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को करीब से जानने का एक अविस्मरणीय व ज्ञानवर्धक अवसर भी सिद्ध हुई। ■



# चिकित्सा शिविर आयोजन









# चिकित्सा शिविर आयोजन









# खेल प्रतियोगिता की उपलब्धियां

एजी महाराष्ट्र फुटबॉल टीम
हमारे कार्यालय के कर्मचारी:

- **श्री नचिकेत पालव**
  लेखापरीक्षक
- **श्री अफ़ज़ाल अख्तर**
  लेखापरीक्षक
- **श्री जंग बहादुर सिंह**
  लिपिक / टंकक







- 9 से 13 फरवरी, 2026 तक नागपुर में आयोजित IA&AD वेस्ट ज़ोन फुटबॉल टूर्नामेंट 2025-26 के विजेता।
- 23 से 27 मार्च, 2026 तक कोलकाता में आयोजित IA&AD इंटर ज़ोन फुटबॉल टूर्नामेंट 2025-26 के उपविजेता।

## खेल प्रतियोगिता की उपलब्धियां




**सुश्री चितवन खत्री, लिपिक/टंकक**
**उपविजेता, महिला एकल बैडमिंटन, अखिल भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र (2026)**




**विजेता – भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय**
**महिला दल चैम्पियनशिप बैडमिंटन, अखिल भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र (2026)**

# त्रैमासिक बैठक की कुछ झलकियाँ









# स्वतंत्रता दिवस की कुछ झलकियाँ











सुश्री अंजलि कुमारी,
भतीजी सुश्री बिना कुमारी राय